আমি পুস্তক খানি হারাইয়াছি।

मैंने पुस्तक खो दी है।

তিনি সারাদিন বাহিরে ছিলেন।

वह तमाम दिन बाहर था।

ফোঁটা ২ করিয়া বোতলটি খালি হইয়া গিয়াছিল।

बूँद बूँद करके बोतल खाली हो गयी।

সে দিন দিন খারাপ হ'য়ে যাচ্ছে।

वह दिन बदिन ख़राब होता जाता है।

সে গান গাহিতে গাহিতে আসছে।

वह गाता गाता आता है।

তিনি মাসে ২ চাকরদিগের মাহিনা চুকাইয়া দেন।

वह महीने महीने नौकरोंकी तनख़्वाह चुका देता है।

বেশী বাক্যে কাজ কম হয়।

बहुत बातोंसे काम कम होता है।

नवां पाठ।

আমি যথাসাধ্য চেষ্টা করিব।

मैं भरसक कोशिश करूँगा।

তিনি আমার প্রতি নেক্‌নজর দিয়াছিলেন।

उसने मुझ पर कृपा की थी।

ভিন্নঃ রুচিহি লোকঃ।

आदमी आदमी की रुचि अलग अलग होती है।

সে আমার কথা শুনে না।
वह मेरी बात नहीं सुनता।
রৌদ্রে বেড়াইও না।
धूपमें मत घूमो।
সে এতক্ষণ চলিয়াগিয়াছে।
वह अभी चला गया है।
তিনি একজন ডাকাত।
वह एक डाकू है।
ইহার দাম এক পয়সাও নহে।
इसका मूल्य एक पैसा भी नहीं।
একথা প্রকাশ পাইয়াছে।
यह बात प्रकाशित हो गई है।
ইহা কোন কাজের নয়।
यह किसी कामका नहीं है।

दसवां पाठ।

সকল কথা খুলে বল।
सारी बात खोल कर कहो।
আমি প্রাণপণে ইহা করিব।
मैं इसे प्राणकी बाज़ी लगाकर करूँगा।
সে পাগল হইয়াছে।

वह पागल हो गया है।

তিনি এই অপমান সহ্য করিয়াছেন।

उसने यह अपमान सह लिया है।

আমি ইহা ধারে কিনিয়া আনিয়াছি।

मैं इसे उधार खरीद कर लाया हूँ।

আমি এ অপমান সহ্য করিতে পারি না।

मैं यह अपमान नहीं सह सकता।

তিনি অবস্থার অতিরিক্ত খরচ করেন।

वह औकात से बाहर खर्च करता है।

এই আফিসে কোনও কর্ম্ম খালি নাই।

इस दफ्तरमें कोई काम खाली नहीं है।

যে অসময়ের বন্ধু, সেই যথার্থ বন্ধু।

विपत्ति में जो काम आवे वही सच्चा मित्र है।

অর্থ অনর্থের মূল।

धन अनर्थ की जड है।

গতস্য শোচনা নাস্তি।

बीती बातका सोच करना व्यर्थ है।

আমি তাঁহাকে দুই শত টাকা ধার দিয়াছি।

मैंने उन्हे २०० रुपये उधार दिये हैं।

ग्यारहवां पाठ।

আমি তাঁহাকে ইংরাজ মনে করিয়াছিলাম।
मैंने उसे अँगरेज़ समझा था।
কুসংবাদ শীঘ্রই প্রচারিত হয়।
बुरी ख़बर जल्दी फैल जाती है।
যত গর্জ্জে, তত বর্ষে না।
जितना गरजता है उतना बरसता नहीं।
প্রত্যেক জাহাজের একজন অধ্যক্ষ আছে।
हरेक जहाज़ में एक अध्यक्ष होता है।
তিনি ও আমি হরিহর আত্মা।
वह और मैं पक्के दोस्त हैं।
তিনি আমার একজন বিশেষ বন্ধু।
वह हमारा दिली दोस्त है।
তাঁহারা আমার পরামর্শ হাসিয়া উড়াইয়া দিয়াছিল।
उन्होंने मेरी सलाह हँसी में उड़ा दी।
তাহারা তাহাদের বাড়ী বিক্রয় করিয়াছে।
उन्होंने अपना मकान बेच दिया है।
আমি স্বয়ং তথায় গমন করিব।
मैं वहाँ खुद जाऊँगा।
তিনি একজন মহাকবি।
वह एक महाकवि है।

এই জাহাজ বিলাত যাইবে।

यह जहाज़ विलायत जायगा।

बारहवाँ पाठ।

অগত্যা আমাকে ইহা স্বীকার করিতে হইবে।

मुझे यह बात अवश्य स्वीकार करनी होगी।

সে আত্মহত্যা করিয়াছে।

उसने आत्महत्या करी है।

এই পাখীটী দেখিতে খুব সুন্দর।

यह पक्षी देखने में ख़ूब अच्छा है।

তিনি বাম কানে কম শুনেন।

वह बाँयें कान से कम सुनता है।

আমার এ বিষয়ে কোন আপত্তি নাই।

इस विषयमें मुझे कुछ उज्र नहीं है।

সভা ভঙ্গ হইল।

सभा भंग होगई है।

ম্যাজিষ্ট্রেট এই মোকদ্দমা সোমবারে করিবেন।

मजिष्टर यह मुक़द्दमा सोमवारको सुनेगा।

আমি তাহাকে কাজ হইতে জবাব দিয়াছি।

मैंने उसे नौकरी से अलग कर दिया है।

আমার সেটী ঠিক স্মরণ হ'চ্চে না।

मुझे उसको ठीक याद नहीं आती।

সে প্রবেশিকা পরীক্ষায় ফেল হইয়াছে।
বহ প্রবৈশিকা পরীক্ষা মেঁ ফেল হোগয়া হৈ।
প্রাণাপেক্ষা ধন অধিক মূল্যবান নহে।
প্রাণোঁ সে ধন অধিক মূল্যবান নহীঁ হৈ।

তেরহবাঁ পাঠ।

চাউলের বাজার চড়িয়া গিয়াছে।
চাঁবলকা বাজ়ার চঢ় গয়া হৈ।
আমি সন্ধ্যার পূর্ব্বে আসিব।
মৈঁ সন্ধ্যাকে পহিলে আউঁগা।
আমি তোমাদিগকে নিশ্চয়ই কহিতেছি।
মৈঁ আপসে নিশ্চয় পূর্ব্বক কহতা হুঁ।
সে কথা কহিতে উদ্যত হইয়াছিল।
বহ বোলনেকে লিয়ে তয্যার হুআ থা।
হরির বাপের সঙ্গে গতকল্য আমার দেখা হইয়াছিল।
কল হরিকে বাপসে মেরী মুলাক়াত হুই থী।
চাউলের তিন টাকা করিয়া মন বিক্রয় হইতেছে।
চাঁবল তীন রুপয়ে মন বিক রহা হৈ।
দুগ্ধ সের হিসাবে বিক্রয় হয়।
দূধ সের কে হিসাব সে বিকতা হৈ।
এই গল্পটি আগে একবার শুনিয়াছিলাম।
যহ বাত একবার আগে সুনী থী।

তিনটার সময় গাড়ী ছাড়িবে।

तीन बजे गाड़ी छूटेगी।

রাধাবাজারে তাঁর বাসা।

उसका बासा राधाबाज़ार में है।

সে যথেষ্ট ধন জমাইয়াছে।

उसने यथेष्ट धन जमा किया है।

चौदहवाँ पाठ।

তিনি একমাত্র পুত্র রাখিয়া মরিয়াছেন।

वह एक मात्र पुत्र छोड़ कर मर गया।

তিনি উপাধি পাইবার জন্য লালায়িত।

वह उपाधि पाने को लालायित है।

তিনি আহার করিতেছেন।

वह भोजन कर रहा है।

তিনি আমার বিরুদ্ধে বলিয়াছেন।

वह मेरे विरुद्ध बोला।

সে ঠিক আমার মনের মত লোক।

वह ठीक मेरे मनका आदमी है।

তিনি সুদে টাকা খাটাইতেছেন।

उसने व्याज पर रुपया लगा दिया है।

টাকায় টাকা বাড়ে।

रुपया से रुपया बढ़ता है।

সে তাহার বাপের নয়ন তারা ছিল।

वह अपने बाप को आंखों का तारा था।

এই বই খানা শীঘ্র ছাপাইব।

मैं इस पुस्तक को जल्दी ही छपवाऊँगा।

আজ আমার জন্মদিন।

आज मेरा जन्मदिन है।

তিনি আমার পরিবর্ত্তে কাজ করিয়াছিলেন।

उसने मेरी जगह काम किया।

पन्द्रहवाँ पाठ।

তাহার যাবজ্জীবন দ্বীপান্তর হইয়াছে।

उसको जन्म भरको देश निकाला हुआ है।

ভয় আছে পাছে সে পাগল হ'য়ে যায়।

भय है कि वह पागल न होजावे।

তাহাকে পুলিসে দেওয়া হইয়াছে।

वह पुलिस के सिपुर्द कर दिया गया है।

আমি যতদূর জানি সে চোর নহে।

जहाँतक मैं जानता हूँ वह चोर नहीं है।

সে তাহার বাপের খুব প্রিয় ছিল।

वह अपने बाप का खूब प्यारा था।

তিনি দুই এক দিনের মধ্যেই আসিবেন।

वह दो एक दिनमें ही आवेंगे।

তাহাকে ফাঁসী দেওয়া হইয়াছে।

উসে ফাঁসী দীগয়ী হৈ।

আমার মরিবার অবকাশ নাই।

মুঝে মরনে কী ভী ফুর্সত নহীঁ হৈ।

এই বাড়ী ভাড়া দেওয়া যাইবে।

যহ মকান ভাড়ে দিয়া জায়গা।

এই টাকাটী ভাঙ্গাইয়া আন ত।

ইস রুপয়ে কো ভঁজালাও।

সোলহবাঁ পাঠ।

তিনি আমাকে গোপাল মনে করিয়াছিলেন।

উসনে মুঝে গোপাল সমঝা থা।

আমি শীঘ্রই তাঁহার টাকা শোধ করিয়া দিব।

মৈঁ উনকা রুপয়া জল্দী হী চুকা দূঁগা।

আমি হিসাব পত্র দেখিয়াছি।

মৈঁনে হিসাব কিতাব দেখ লিয়া হৈ।

আমার আজকাল টানাটানির অবস্থা।

আজকল মেরী হালত তংগ হৈ।

প্রতিদিন ঈশ্বরোপাসনা করা উচিত।

প্রতিদিন ঈশ্বরোপাসনা করনা উচিত হৈ।

তিনি জামিনে খালাস পাইয়াছেন।

उसने ज़मानत पर रिहाई पायी है।

তিনি তার সমুদয় সম্পত্তি বাঁধা দিয়াছেন।

उसने अपनी सारी सम्पत्ति बन्धक रखदी है।

ভবিষ্যতের জন্য কিছু সঞ্চয় করা ভাল।

भविष्यतके लिये कुछ सञ्चय करना अच्छा है।

আজকাল আমাকে ভারি টানাটানি করিয়া চালাইতে হয়।

आजकल मुझे भारी खींचतान करकै काम चलाना होता है।

আমি কাল তোমার সঙ্গে দেখা করিব।

मैं कल तुमसे मिलूँगा।

আজ আমার জ্বর বোধ হইতেছে।

आज मुझे ज्वर मालुम होता है।

সে দেউলে হইয়াছে।

वह दिवालिया होगया है।

ইনকম্ টেক্স উঠাইয়া দেওয়া উচিত।

इनकम् टैक्स उठा देना उचित है।

আমি তাহাকে ঘুস দিব না।

मैं उसे घूँस न दूँगा।

সৌন্দর্য্য হৃদয়কে আকর্ষণ করে।

सुन्दरता दिलको खींच लेती है।

এ জীবনের সুখ ক্ষণস্থায়ী।

इस जीवन का सुख चणस्थायी है।

তাহার বয়স কেবল মাত্র দশ বৎসর।
उसकी उम्र सिर्फ दश वर्ष की है।
আমি তাহার সহিত বিবাদ মিটাইয়া ফেলিব।
मैं उससे झगड़ा मिटा लूँगा।

—*—

सत्तरहवाँ पाठ।

তিনি অনেক রাত্রি পর্য্যন্ত জাগেন।
वह बहुत राततक जागता है।
আমি যে ক্ষতি করিয়াছি, তাহা পূরণ করিব।
मैंने जो हानि की है उसे पूरी करूँगा।
সে তাহার বাপের বিষয় পাইয়াছে।
उसने अपने बाप की मिलकियत पाई है।
আমি তোমাকে বিশেষরূপে সাজা দিব।
मैं तुमको अच्छीतरह दण्ड दूँगा।
আমি একটা ব্যব্সা করিব।
मैं एक व्यवसाय करूँगा।
সে আমার পত্রের জবাব দিয়াছে।
उसने मेरे पत्र का जवाब दिया है।
সে আমার চেয়ে বেশী চালাক।
वह मुझसे अधिक चालाक है।

তিনি এখন বেকার আছেন।
वह अब बेरोज़गार है।
মানুষ মাত্রেরই ভ্রম হয়।
मनुष्य मात्रको भ्रम होता है।

अठारहवाँ पाठ।

আমি বেশ ভাল আছি।
मैं बिल्कुल तन्दुरुस्त हूँ।
সে আমাকে এ বিষয়ে ঠকিয়েছে।
उसने मुझे इस काममें धोखा दिया है।
আমি খুব সকালে উঠিয়াছিলাম।
मैं खूब सवेरे उठा था।
আমি তাঁহার সঙ্গে ছিলাম।
मैं उसके साथ था।
তোমার স্বাস্থের দিকে দৃষ্টি রাখা উচিত।
तुमको स्वास्थ्य की तरफ नज़र रखनी चाहिये।
আমি তাঁহাকে বাড়ীতে দেখিতে পাইলাম না।
मुझे वह घर में नहीं मिला।
গরু আমাদের অত্যন্ত উপকারী।
गाय हमारे लिये अत्यन्त उपकारी है।
সে একজন জ্ঞানী লোক হ'বে।
वह एक बुद्धिमान आदमी होगा।

উন্নীসবাঁ পাঠ।

সে একটী প্রদীপ হাতে লইয়া আসিয়াছিল।

वह एक दीपक हाथमें लेकर आया था।

আমার কাজ যা তা আমি জানি।

मै अपना काम जानता हूँ।

ইহা কিনিতে তাঁহার চারি টাকা লাগিয়াছে।

इसको खरीदनेमें उसके चार रुपये लगे हैं।

ইহা প্রস্থে এক ইঞ্চ।

यह चौड़ाई में एक इँच है।

আমি যাহা চাই, তাই আমাকে দাও।

मैं जो चाहता हूँ वही मुझे दो।

তোমাকেই বলতে হবে।

तुम्हें ही बोलना होगा।

তিনি এখানে এক দিন অন্তর আইসেন।

वह यहां एक दिनके अन्तर से आता है।

তাঁহার এক চোক কানা।

वह एक आँखसे काना है।

তিনি ভাল দিন দেখিয়াছেন।

उसने अच्छे दिन देखे हैं।

তুমি সেদিন আমাকে বোকা বানাইয়াছিলে।

तुमने उस दिन मुझे मूर्ख बना दिया था।

बीसवाँ पाठ।

কুক্ষণে তাহাকে আমি বাড়ীতে স্থান দিয়াছিলাম।

बुरे समय में मैंने उसे घरमें जगह दी।

তিনি যাহা খান তাহাই বমি করিয়া ফেলেন।

वह जो खाता है वही वमन कर देता है।

তাহারা সকলে একই প্রকৃতির লোক।

उन सबका एक स्वभाव है।

ডাকাতেরা কুঁড়ে ঘরে আগুণ লাগিয়ে দিয়েছিল।

डाकुओंने झोंपड़ी में आग लगादी थी।

ঘটনাক্রমে আমি সেখানে উপস্থিত ছিলাম।

दैवयोग से मैं वहाँ मौजूद था।

এ রকম অবস্থায় আমি বিল খানি গ্রাহ্য করিতে পারি না।

इस हालत में मैं बिलको मञ्जूर नहीं कर सकता।

তিনি তাঁহার সমস্ত বিপদে অটল ছিলেন।

वह अपनी सारी विपद में अटल था।

আমি উভয় সঙ্কটে পড়িয়াছি।

मैं दो आफतों में फँसा हूँ। मुझे दोनों ओरसे विपद है।

তুমি তাহার সামনে পড় নাই, তোমার পক্ষে ভালই হইয়াছে।

तुम उसके सामने नहीं पड़े यह तुम्हारे लिये अच्छा ही हुआ

इक्कीसवाँ पाठ।

তিনি সে দিন তোমার বড় সুখ্যাতি করিয়াছিলেন।

उसने उस दिन तुम्हारी बड़ी तारीफ़ की थी।

এই বিষয়টী লইয়াই বাদানুবাদ চলিতেছে।

इस विषय पर ही वादानुवाद होता है।

ইহা একটী গাঁজাখুরি গল্প।

यह एक गँजेड़ियों की सी बात है।

সকলেই তাহাকে ধিক্কার দিয়াছিল।

सबोंने ही उसे धिक्कारा था।

খাদ্য কম পড়ে ছিল।

खानेका सामान कम होगया।

আমি তাঁহাকে দেখতে পারি না।

मैं उसको नहीं देख सकता।

মাহিনা সেওয়ায় প্রতি মাসে তিনি পঞ্চাশ টাকা পান।

वेतन के सिवाय वह ५० रुपया हर महीने पाता है।

সে তাহার বংশের কুলাঙ্গার।

वह उसके बंशमें कुलांगार है।

তাঁহার স্ত্রী গর্ভবতী।

उसकी स्त्री गर्भवती है।

बाईसवाँ पाठ ।

তুমি অবকাশমত তাহাদিগকে দেখিতে পার।

तुम उनसे अपनी फ़ुरसत के समय मिल सक्ते हो ।

তিনি রীতিমত আহার করিয়াছিলেন।

उसने खूब खाया ।

ইহার আর প্রচলন নাই ।

आज कल इसका प्रचार नहीं है।

আমি তোমাকে ভগ্নোৎসাহ করিতে ইচ্ছা করি না।

मैं आपको भग्नोत्साह करना नहीं चाहता ।

একটা মিথ্যার জন্য দশটা মিথ্যা বলিতে হয়।

एक झूँठके लिये दश झूँठ बोलनी पड़ती हैं ।

ঘরের মধ্যে চারিদিকে দেখ।

घरमें चारों तरफ देखो ।

তিনি বড় উদ্বিগ্ন আছেন।

वह बहुतही उद्विग्न है ।

তিনি বয়সে ছোট, জ্ঞানে বড়।

वह उम्र में छोटा है किन्तु ज्ञानमें बड़ा है ।

সকলে কাজ করিলে সহজ হয়।

सब के काम करने से काम सहज होजाता है ।

আহঙ্কারের পতন আছেই।

घमण्डका सिर नीचा होता ही है ।

तेईसवाँ पाठ ।

সে হঠাৎ কেঁদে উঠে ছিল।

वह यकायक रो पड़ा ।

তাহারা লুকোচুরি খেলা করিতেছে।

वह आँख मिचौनी खेलते हैं ।

যতক্ষণ শ্বাস, ততক্ষণ আশ।

जब तक श्वासा, तब तक आशा ।

আমি এক দমে দশ মাইল যাইতে পারি।

मैं एक दम दश मील जासक्ता हूँ ।

আমি ছুটিতে আছি।

मैं छुट्टी पर हूँ ।

তাঁর চেষ্টার কোনও ফল হয় নাই।

उसकी चेष्टाका कुछ भी फल न हुआ ।

আমি আজ পাঁচটার সময় উঠিয়াছিলাম।

मैं आज पाँच बजे उठा ।

তিনি সমুদ্র ভ্রমণ ভালবাসেন।

उसे समुद्र भ्रमण अच्छा लगता है ।

এ বিষয়ে তাঁহার মত শিরোধার্য্য।

इस विषय में उसका मत शिरोधार्य्य है ।

আমি তার উদ্দেশ্য বুঝিতে পারি নাই।

मैं उसका उद्देश्य समझ नहीं सका ।

चौबीसवाँ पाठ ।

তিনি এত বেগে চলিলেন যে, তাহাকে ধরিতে পারিলাম না।

वह इतनी तेज़ी से चला कि मैं उसे न पकड़ सका।

ইহাতে অপরের উপকার হ'তে পারে।

इससे दूसरों का उपकार होसक्ता है।

তৃষ্ণাতে আমার প্রাণ যায় যায় হয়ে উঠে ছিল।

प्यासके मारे मेरा दम निकलता था।

চাকরের উপর তোমার এত কড়া হওয়া উচিত নয়।

नौकर पर तुम्हारा इतना कड़ा रहना उचित नहीं है।

কেহ আপন দোষ দেখিতে পায় না।

किसीको अपना दोष मालुम नहीं होता।

বিশ্বাসই সফলতার অনুচর।

विश्वास ही सफलताका अनुचर है।

সে আমাকে তাচ্ছিল্য করে।

वह मुझ से नफ़रत करता है।

দুঃখভোগ সৌভাগ্যের কারণ।

दुःख भोगने के पीछे सुख मिलता है।

সুচরিত্র এবং সাহস মানবকে সম্মান দেয়।

सुचरित्र एवं साहस से मनुष्य का सन्मान होता है।

তাহারা অনেক কথা কয়।

वे बहुत सी बातें कहते हैं।

পচ্চীসবাঁ পাঠ।

মুরগীতে ডিম পাড়ে।

মুর্গী অণ্ডা দেতী হৈ।

বেগে বায়ু বহিতেছিল।

হবা তেজ়ী সে চল রহী থী।

তিনি বিদ্বেষ যশতঃ এ কাজ করিয়াছেন।

উসনে বিদ্বেষকে বশ হোকর য়হ কাম কিয়া হৈ।

বাতাস বড় ঠাণ্ডা ও কন্‌কনে।

হঁবা বড়ী ঠণ্ডী ঔর ঠিঠরানেবালী হৈ।

আমি তোমাকে মনের কথা সব ব'লেছি।

মৈঁনে তুমসে মনকী সব বাতেঁ কহদী হৈঁ।

সে মজার লোক।

বহ মজ়েকা আদমী হৈ।

আমি নগদ দাম দিব।

মৈঁ নক়দ দাম দুঁগা।

তাঁহার মনের গতি বুঝা কঠিন।

উসকে মনকী গতি জাননা কঠিন হৈ।

এর দাম তোমাকে অনেক দিতে হবে।

ইসকা দাম তুমকো বহুত দেনা হোগা।

छब्बीसवाँ पाठ।

শিক্ষাই মনকে শুদ্ধ ও উন্নত করে।

शिक्षा ही मनको शुद्ध और उन्नत करती है।

তিনি আমার কথায় কর্ণপাত করিলেন না।

उसने हमारी बात पर कान नहीं दिया।

চক্ষের পলক পড়তে না পড়তে তিনি অদৃশ্য হইলেন ;

पलक मारते २ वह ग़ायब होगया।

তিনি গভীর রাত্রে যাত্রা করিয়াছেন।

उसने आधी रातको यात्रा की।

আমি সর্ব্বান্তঃকরণে তোমার মঙ্গল কামনা করি।

मैं अन्त:करण से आपका भला चाहता हूँ।

এক দিনে কোন কাজ হয় না।

एक दिनमें कोई भी काम नहीं होता।

মানুষ মনে করে এক, ঘটে আর।

आदमी सोचता कुछ है और होता कुछ है।

তাঁহার শিখিবার বয়স আর নাই।

उसकी सीखनेकी उम्र और नहीं है।

তিনি সমস্ত জীবন সুখে কাটাইয়াছেন।

उसकी सारी उम्र सुखमें बीती।

তিনি লজ্জায় মাথা হেট করিলেন।

उसने लज्जाके मारे सिर नीचा कर लिया।

সুবুদ্ধিকে এক কথা মরণ সমান।

बुद्धिमानको एक बातमें ही मरण हो जाता है।

মানুষের সময় একবার ফিরেই।

मनुष्य के दिन एकबार तो फिरते ही हैं।

পুলিস ডাকতে ২ চোরটা পিট্টান দিলে।

पुलिस के बुलाते २ चोर हवा होगया।

মিষ্টান্নগুলি দেখে বালকটীর মুখ দিয়া লাল পড়িতে লাগিল।

मिठाई देखते ही बालक की लार पड़ने लगी।

सत्ताईसवाँ पाठ।

ভূগোল শিখিবার আর সহজ কোনও উপায় নাই।

भूगोल सीखने का और सहज तरीका नहीं है।

তাঁহার কথা আমার কানে বাজিতেছে।

उसकी बात मेरे कानमें बज रही है।

প্রেসের কাজ খুব চলিতেছে।

प्रेसका काम खूब चलता है।

মনে একটু সাহস কর।

दिलमें थोड़ी हिम्मत करो।

ইহা হাসি ঠাট্টার বিষয় নহে।

यह हँसी ठट्ठे की बात नहीं है।

বালকেরা জয়ধ্বনি করিতেছে।

बालक जयध्वनि कर रहे हैं।

তার পর কি হইল, বল বল।

उसके पीछे क्या हुआ, बोलो २।

আজকাল তুমি আর এক রকম হইয়া গিয়াছ।

आजकल तुम और ही तरह के होगये हो।

এই ঘরে দরজা ভেজাইবার সময়ে বড় শব্দ হয়।

इस घरका द्वार बन्द करनेके समय बड़ा शब्द होता है।

তোমরা দুজনে এক সাঁচে গড়া।

तुम दोनों ही एक साँचे में ढले हो।

আমওয়ালাকে আমায় চারি আনা দিতে হইবে।

आमवाले को मुझे चार आने देने होंगे।

মালী গাছ পুতিতেছে।

माली दरख्त लगा रहा है।

আহ্লাদে তোমার মুখ উজ্জ্বল হইতেছে।

खुशी के मारे तुम्हारा चेहरा दमक रहा है।

आठवां अध्याय ।

पहिला पाठ ।

দিবা রাত্র	दिन रात	অন্ন বস্ত্র	अन्न वस्त्र
অন্ন জল	अन्न जल	ধন জন	धन जन
রক্ত মাংস	रक्त माँस	মাছ মাংস	मछली माँस
স্ত্রী পুরুষ	स्त्री पुरुष	জল স্থল	जल स्थल
মন প্রাণ	मन प्राण	তালা চাবি	ताला चाभी
বাড়ী ঘর	घर मकान	পাপ পুণ্য	पाप पुण्य
তল্পী তাল্পা	गठरी मुठरी	হাত পা	हाथ पाँव
কাগজ কলম	क़ाग़ज़ क़लम	পিতা পুত্র	बाप बेटा ।
পশু পক্ষী	पशु पची	ভাল মন্দ	अच्छा बुरा
ধনী নির্দ্ধন	धनी निर्धन	কুকুর বিড়াল	कुत्ता बिल्ली
শত্রু মিত্র	शत्रु मित्र	চন্দ্র সূর্য্য	चाँद सूरज
নর বানর	नर बानर	ধর্ম্মাধর্ম্ম	धर्माधर्म

মনুষ্য জাতি হাসিতে পারে।

मनुष्य जाति हँस सक्ती है ।

সূর্য্য পূর্ব্ব দিকে উদয় হয়।

सूर्य्य पूर्व दिशामें उदय होता है ।

ভারতীয় কবিদিগের মধ্যে কালিদাস শ্রেষ্ঠ।

भारतीय कवियों में कालिदास श्रेष्ठ था।

স্বর্ণ সর্ব্বাপেক্ষা বহুমূল্য ধাতু।

सोना सब की अपेक्षा बहुमूल्य धातु है।

দুঃখীদিগের প্রতি দয়ালু হও।

दुःखियों पर दया करो।

দিল্লী ভারতবর্ষের রাজধানী।

दिल्ली भारतवर्ष की राजधानी है।

তেল ঘির চেয়ে সস্তা। तेल घीसे सस्ता है।

দয়ার তুল্য আর কিছুই নাই।

दयाके समान और कुछ नहीं है।

সাধুতাই সর্ব্বশ্রেষ্ঠ কৌশল।

ईमानदारी ही सबसे अच्छी नीति है।

ধন দৌলত এ সংসারে চিরস্থায়ী নয়।

इस संसार में धन दौलत चिरस्थायी नहीं है।

दूसरा पाठ।

হিতাহিত	हिताहित	ভাই ভগিনী	भाई बहिन
গুরু শিষ্য	गुरु चेला	স্বর্গ মর্ত্ত	स्वर्ग मर्त्त
রাজা প্রজা	राजा प्रजा	চেতন অচেতন	चेतन अचेतन
কীট পতঙ্গ	कीट पतंग	দেবী দেবতা	देवी देवता

সুখ দুঃখ सुख दुःख হাঁ কি না हाँ या ना

তোমার বিলম্ব হইয়াছে।

तुम्हें देर होगयी है।

তাহার মাতার মৃত্যু হইয়াছে।

उसकी माकी मृत्यु होगयी है।

তাহার রক্তপাত হইতেছে।

उसकी खून बहता है।

আমার যাওয়া হইবে না।

मेरा जाना न होगा।

তোমার আসা উচিত ছিল না।

तुम्हारा आना उचित न था।

আমাকে অনেক কাজ করিতে হইবে।

मुझे बहुत से काम करने हैं।

এই আবেদন পত্রে আপনাকে স্বাক্ষর করিতে হইবে।

तुमको इस आवेदनपत्र पर हस्ताक्षर करने होंगे।

গাভীতে ঘাস খায়।

गाय घास खाती हैं।

পাখীতে বাসা নির্ম্মাণ করে।

पक्षी घोंसले बनाया करते हैं।

দিবসে নিদ্রা যাওয়া বড় অনিষ্টকর।

दिनमें नींद लेना बड़ा नुकसानमन्द है।

তিনি সাড়ে তিন শত টাকা বেতন পান।

वह साढ़े तीनसौ रुपया तनख्वाह पाता है।
আমার বয়স তোমার বয়সের দ্বিগুণ।
मेरी उम्र तुम्हारी उम्रसे दूनी है।
সওয়া পাঁচ সের চিনি আন।
सवा पाँच सेर चीनी लाओ।
সাড়ে পাঁচ মাইল রাস্তা চলা সহজ নয়।
साढ़े पाँच मील रास्ता चलना सहज नहीं है।
পৌনে চারি সের দুধ দাও।
पौने चार सेर दूध दो।
হরি এ পদের যোগ্য নয়।
हरि इस पदके योग्य नहीं है।
পুলীস তাহাকে ছাড়িয়া দিয়াছে।
पुलिसने उसे छोड़ दिया है।
আমার মাথা ধরিয়াছে। मेरे सिरमें दर्द है।
তিনি কোন কথা বলিলেন না। वह कुछ न बोला।

तीसरा पाठ।

১ এক = एक
২ দুই = दो
৩ তিন = तीन
৪ চারি = चार
৫ পাঁচ = पाँच
৬ ছয় = छै
৭ সাত = सात
৮ আট = आठ
৯ নয় = नौ
১০ দশ = दस

১১ এগার = ग्यारह
১২ বার = बारह
১৩ তের = तेरह
১৪ চৌদ্দ = चौदह
১৫ পনের = पन्द्रह
১৬ ষোল = सोलह
১৭ সতের = सत्तरह
১৮ আঠার = अठारह
১৯ উনিশ = उन्नीस
২০ কুড়ি = बीस
২১ একুশ = इक्कीस
২২ বাইশ = बाईस
২৩ তেইশ = तेईस
২৪ চব্বিশ = चौबीस
২৫ পঁচিশ = पच्चीस
২৬ ছাব্বিশ = छब्बीस
২৭ সাতাইশ = सत्ताइस
২৮ আটাইশ = अट्ठाईस
২৯ উনত্রিশ = उनतीस
৩০ ত্রিশ = तीस
৩১ একত্রিশ = इक्तीस
৩২ বত্রিশ = बत्तीस
৩৩ তেত্রিশ = तेंतीस
৩৪ চৌত্রিশ = चौंतीस
৩৫ পঁয়ত্রিশ = पैंतीस
৩৬ ছত্রিশ = छत्तीस
৩৭ সাঁইত্রিশ = सैंतीस
৩৮ আটত্রিশ = अढ़तीस
৩৯ উনচল্লিশ = उनतालीस
৪০ চল্লিশ = चालीस
৪১ এক চল্লিশ = इकतालीस
৪২ বিয়াল্লিশ = बयालीस
৪৩ তেতাল্লিশ = तैतालीस
৪৪ চুয়াল্লিশ = चँवालीस
৪৫ পঁয়তাল্লিশ = पैंतालीस
৪৬ ছয় চল্লিশ = छियालीस
৪৭ সাত চল্লিশ = सैंतालीस
৪৮ আট চল্লিশ = अढ़तालीस
৪৯ উনপঞ্চাশ = उनपचास
৫০ পঞ্চাশ = पचास
৫১ একান্ন = इक्यावन
৫২ বায়ান্ন = बावन
৫৩ তিপান্ন = तेपन
৫৪ চুয়ান্ন = चौअन

৫৫ পঞ্চান্ন = पचपन

৫৬ ছাপান্ন = छप्पन

৫৭ সাতান্ন = सत्तावन

৫৮ আটান্ন = अट्ठावन

৫৯ উনষাট = उनसठ

৬০ ষাট = साठ

৬১ একষট্টি = इकसठ

৬২ বাষট্টি = बासठ

৬৩ তেষট্টি = त्रेसठ

৬৪ চৌষট্টি = चौसठ

৬৫ পঁয়ষট্টি = पैंसठ

৬৬ ছয়ষট্টি = छासठ

৬৭ সাতষট্টি = सड़सठ

৬৮ আটষট্টি = अड़सठ

৬৯ উনসত্তর = उनहत्तर

৭০ সত্তর = सत्तर

৭১ একাত্তর = इकहत्तर

৭২ বায়াত্তর = बहत्तर

৭৩ তিয়াত্তর = तिहत्तर

৭৪ চুয়াত্তর = चौहत्तर

৭৫ পঁচাত্তর = पचहत्तर

৭৬ ছিয়াত্তর = छिहत्तर

৭৭ সাতাত্তর = सतहत्तर

৭৮ আটাত্তর = अठहत्तर

৭৯ উনআশি = उन्यासी

৮০ আশি = अस्सी

৮১ একাশি = इक्यासी

৮২ বিরাশি = बयासी

৮৩ তিরাশি = तिरासी

৮৪ চুরাশি = चौरासी

৮৫ পঁচাশি = पिच्चासी

৮৬ ছিয়াশি = छियासी

৮৭ সাতাশি = सत्तासी

৮৮ অষ্টাশি = अट्ठासी

৮৯ উননব্বুই = नवासी

৯০ নব্বুই = नब्बे

৯১ একানব্বুই = इक्यानवे

৯২ বিরানব্বুই = बाणवे

৯৩ তিরানব্বুই = तिरानवे

৯৪ চুরানব্বুই = चौरानवे

৯৫ পঁচানব্বুই = पँचानवे

৯৬ ছিয়ানব্বুই = छियानवे

৯৭ সাতানব্বুই = सत्तानवे

৯৮ আটানব্বুই = अट्ठानवे

৯৯ নিরেনব্বই = निन्यानवे
১০০ এক শত = एकसौ
১০০০ একহাজার = एकहज़ार
১০,০০০ দশ হাজার = दस हज़ार
১০০,০০০ লক্ষ = लाख
১০০০০০০ দশ লক্ষ = दस लाख

चौथा पाठ।

তাকে এখন যেতে বল। उसे इस समय जाने को कहो।

হিন্দুরা শব দাহ করে। हिन्दूका मुर्दा जलाया जाता है।

তিনি বাজারে চা কিনিতে গেলেন।

वह बाज़ार में चाय ख़रीदने गये।

আমি তাঁহাকে দেখিতে আসিয়াছিলাম।

मैं उसे देखने को आया था।

আমি যাইতে প্রস্তুত ছিলাম। मैं जानेको तय्यार था।

তাঁহারা উপন্যাস পড়িতে ভাল বাসেন।

उनको उपन्यास पढ़ना अच्छा लगता है।

তোমার বই আজ ফিরাইয়া দিয়াছি।

तुम्हारी पुस्तक आज लौटादी है।

তিনি আজ প্রাতে কাশী গিয়াছেন।

वह आज सबेरे काशी गया है।

রাম কাল কলিকাতায় গিয়াছে। राम कल कलकत्ते गया है।

এ সপ্তাহে প্রচুর বৃষ্টি হইয়াছে।

इस सप्ताह में पानी खूब बरसा।

पाँचवाँ पाठ।

শীঘ্র কিংবা বিলম্বে	जल्दी या देरसे
আর একবার	एक दफा और, एकबार फिर
সেই মুহূর্ত্তেই	उसी मुहूर्त्त में, तुरत ही
বর্ত্তমান সময়ে	वर्त्तमान समय में
তৎক্ষণাৎ	फौरन, उसी क्षण
এখনও	अब भी
এই মাত্র	अभी अभी
সেই দিনই	उसी दिन
এতাবৎকাল	आजतक

তাঁহার গলায় গলাবন্ধ ছিল।

उसकी गलेमें गुलूबन्द था।

প্রতি সপ্তাহে কলিকাতায় আন্দাজ দুই শত লোকের মৃত্যু হয়।

कलकत्तेमें हर हफ्ते अन्दाज़न दो सौ आदमी मरते हैं।

এখন আন্দাজ সাতটা বাজিয়াছে।

इस समय अन्दाज़न सात बजे हैं।

গত বৎসরের পূর্ব্ব বৎসর তিনি মরমর হইয়াছিলেন।

त्यौरस की साल वह मरूँ मरूँ हो गया था।

আমি প্রত্যহ আন্দাজ দেড় সের দুধ খাইয়া থাকি।

मैं हर रोज़ अन्दाज़न डेढ़ सेर दूध पीता हूँ।

সন্তানগণের শিক্ষা বিষয়ে আমি বড় উদ্বিগ্ন আছি।

मुझे बच्चों की शिक्षाका बड़ा फ़िक्र है।

তারাগণ মেঘের উপরে রহিয়াছে।

तारे बादलों के ऊपर हैं।

পঞ্চাশ জন লোকের অধিক উপস্থিত ছিল না।

पचास से अधिक आदमी मौजूद नहीं थे।

এখন আন্দাজ একটা বাজিয়াছে।

इस समय अन्दाज़न एक बजा है।

চারিটার সময় তিনি এখানে ছিলেন।

चार बजे वह यहाँ था।

বারকপুরে আমার একটি ক্ষুদ্র বাগান আছে।

बारकपुर में मेरा एक छोटासा बग़ीचा है।

দুর্ভিক্ষের জন্য শস্য সঞ্চয় করিয়া রাখ।

अकाल के लिये शस्य जमा कर रक्खो।

দরিদ্রতা প্রযুক্ত তিনি দেনা পরিশোধ করিতে পারেন নাই।

वह दरिद्रता के कारण से देना नहीं चुका सका।

বার্দ্ধক্য প্রযুক্ত তিনি চলিতে অশক্ত।

बुढ़ापे के कारण वह चलनेमें अशक्त है।

তিনি লজ্জা বশতঃ এ'কথার উল্লেখ করিলেন না।

उसने लज्जा के मारे यह बात नहीं कही।

মনোযোগ পূর্ব্বক পাঠ অভ্যাস কর।

मन लगाकर पाठ पढ़ो।

তিনি হাতে হাতেই ফল পাইয়াছিলেন।

उन्हों ने हाथों हाथ फल पाया।

আমি কোন ক্রমে এ কাজ করিব না।
मैं किसी तरह इस काम को न करूँगा।
দিন দিন আমাদের দেশের উন্নতি হইতেছে।
दिनों दिन हमारे देश की उन्नति होरही है।

छठा पाठ।

যাবজ্জীবন	ज़िन्दगी भर, यावज्जीवन
চিরকালের জন্য	सदा के लिये
এক ঘণ্টার জন্য	एक घण्टे तक
বহুকাল ব্যাপিয়া	मुद्दत तक,
অবিলম্বে	एकदम
ইতিমধ্যে	इस बीचमें
অশুভক্ষণে	बुरी घड़ी में
ঠিক সময়ে	ठीक समयपर
নিমেষ মধ্যে	पलक मारते मारते
পরিশেষে	अन्त में, आखिरकार
আজকাল	आजकल
সারাদিন	सब दिन, तमाम दिन
সপ্তাহ ব্যাপিয়া	हफ्तेभर, सप्ताहभर
সংবৎসর ধরিয়া	वर्षभर, सालभर
সে দিন	उस दिन
একদা	एक समय

তিন ঘণ্টা অন্তর	तीन तीन घण्टे पर
গত শনিবার	गया शनिवार

আগামী শনিবারের পরের শনিবার।

आगामी शनिवार के बादका शनिवार

চারি দিনের মধ্যে	चार दिनोंमें
এক সপ্তাহের মধ্যে	एक सप्ताहमें
চারি ঘটিকার সময়	चार बजे
মধ্য রাত্রিতে	आधी रात को
প্রাতঃকালে	प्रातः समय, सवेरे
প্রত্যুষে	पौफटे
মধ্যাহ্নে	मध्यान्ह कालमें, दोपहरको
দুপুর বেলায়	दोपहर के समय
বৈকালে	तीसरे पहर
সন্ধ্যাকালে	सन्ध्या समय, शामको
রাত্রিতে	रात को, रात में
দিবাভাগে	दिन में
এক মাসে	एक महीने में
তিন বৎসরে	तीन वर्षमें
শনিবারে	शनिवार को
মে মাসে	मई महीने में
শেষে	अन्त में
অবশেষে	अन्त में, आखिरकार

অদ্য হইতে	आज से
সূর্য্যোদয়ের পূর্ব্বে	सूर्य्योदय से पहिले
অদ্যাবধি	आज तक
এতক্ষণে	इस समय
প্রত্যেক দিন	प्रत्येक दिन, हर दिन
শৈশবে	शैशवकाल में, बचपन में
বার্দ্ধক্যে	बुढ़ापे में
মৃত্যুকালে	मृत्यु समय में, मरने के वक्त
যথাকালে	उचित समय पर

আমি সে খবর শুনিয়াছি।

मैंने वह ख़बर सुनी है।

রাম হরির চেয়ে ভাল।

राम हरिसे अच्छा है।

তিনি আমার চেয়ে ভাল ছেলে।

वह मेरी अपेक्षा अच्छा लड़का है।

তোমার অপেক্ষা যদু বুদ্ধিমান।

यदु तुम्हारी अपेक्षा बुद्धिमान है।

শরৎ অপেক্ষা সতীশ পরিশ্রমী।

सतीश शरत की बनिस्बत ज़ियादा मिहनती है।

কাঠ হইতে লৌহ শক্ত।

काठसे लोहा सख़्त होता है।

সঙ্গীতের চেয়ে মধুর আর কিছুই নাই।

सङ्गीत से मीठी और कोई चीज़ नहीं है।

দুই ভাইয়ের মধ্যে নরেন বড়।

दोनों भाईयों में नरेन बड़ा है।

দুই জনের মধ্যে কে বেশী জ্ঞানী।

दोनोंमें से कौन अधिक ज्ञानी है ?

আমার চেয়ে তাহার জোর বেশী।

उसमें मुझसे अधिक बल है।

আমার ঘর তোমার ঘর অপেক্ষা নিকৃষ্ট।

मेरा घर तुम्हारे घरसे निकृष्ट है।

গদ্য হইতে পদ্য অনেক বেশী শক্ত।

गद्यसे पद्य बहुत कठिन है।

জাপানবাসীরা রুষদিগের অপেক্ষা অনেক অধিক পরাক্রমশালী।

जापानवासी रूसियोंकी अपेक्षा अत्याधिक पराक्रमी हैं।

তিনি আমার অপেক্ষা পাঁচ বৎসরের বড়।

वह मुझसे पाँच वर्ष बड़ा है।

পৃথিবীর মধ্যে ভারতবর্ষ সর্ব্বোৎকৃষ্ট দেশ।

संसारमें भारतवर्ष सबसे अच्छा देश है।

ব্যবসা চাকরী অপেক্ষা অনেক বেশী ভাল।

व्यवसाय चाकरीसे बहुत अच्छा है।

পণ্ডিতেরা মূর্খ লোক অপেক্ষা বেশী সুখী।

पण्डित लोग मूर्खों से अधिक सुखी हैं।

सातवाँ पाठ ।

उपयोगी शब्द ।

অনুগ্রহ করিয়া । मिहरबानीसे, कृपा करके ।

মনোযোগ করিয়া ध्यानसे, ध्यान देकर ।

শপথ করিয়া । शपथपूर्वक, क़सम खाकर ।

অত্যন্ত তাড়াতাড়ি করিয়া । अत्यन्त शीघ्रतासे ।

স্বেচ্ছাপূর্ব্বক । अपनी मरज़ीसे, अपनी इच्छासे ।

যত্নপূর্ব্বক । यत्नपूर्वक, होशियारीसे

ঘোড়ায় চড়িয়া । घोड़े पर चढ़ कर ।

পায়ে হাঁটিয়া । पैदल ।

সাবধান পূর্ব্বক । सावधानीसे ।

আলস্য করিয়া । आलस्य करके, सुस्तीसे ।

পীড়া বশতঃ । रोगके कारणसे ।

দুর্ব্বলতা বশতঃ । दुर्ब्बलताके कारणसे ।

দরিদ্রতা নিবন্ধন । दरिद्रताके कारणसे ।

শীতপ্রযুক্ত । जाड़ेके मारे ।

ঈর্ষাপ্রযুক্ত । ईर्षाके कारणसे ।

সময়ের অভাব বশতঃ । समय न रहनेसे ।

বিলম্ব বশতঃ । देर होनेकी वजहसे ।

স্নেহ বশতঃ । प्रेमके कारण ।

দৈবক্রমে । दैवात्, इत्तिफ़ाक से ।

ভাগ্যক্রমে। भाग्यवश।

কোনক্রমে না। किसी तरह नहीं।

ভ্রমক্রমে। भूलसे, ग़लतीसे।

প্রসঙ্গক্রমে। प्रसङ्गवश।

পর্য্যায়ক্রমে। बारीसे।

সম্মতিক্রমে। सम्मतिसे।

দিন দিন। दिन ब दिन, रोज़ ब रोज़।

ঘণ্টায় ঘণ্টায়। घण्टे घण्टे में।

সপ্তাহে সপ্তাহে। सप्ताह सप्ताह में।

একে একে। एक एक करके।

ক্রমে ক্রমে। क्रम क्रमसे।

পদে পদে। पँड पँड पर, क़दम क़दम पर।

ফোঁটা ফোঁটা। बूँद बूँद करके।

দ্বারে দ্বারে। द्वार द्वार पर।

রাস্তায় রাস্তায়। गली गलीमें।

দেশে দেশে। देश देशमें।

ঘরে ঘরে। घर घरमें।

যুগে যুগে। युग युगमें।

বনে বনে। बन बनमें।

নগরে নগরে। नगर नगर में

সর্ব্বসমেত। बिलकुल, सबका सब।

কোনক্রমেই না। किसी उपाय से नहीं।

গোপনে। गुप्तरूपसे ;

পরিবর্ত্তে। बजाय, जगहमें, स्थानमें।

সত্ত্বেও। तिसपर भी

সকল প্রকারে। सबतरहसे।

সর্ব্বতোভাবে। सर्व्वतोभावसे

অনেকের মতে। बहुतोंकी सम्मतिसे।

বিবেচনা করিয়া। ख्याल करके, बलिहाज़।

পক্ষান্তরে। पक्षान्तरमें।

সৎউদ্দেশ্যে। अच्छे उद्देश्यसे।

উচ্চৈঃস্বরে। उच्चस्वरसे, ज़ोरकी आवाज़से।

কর্কশ স্বরে। कठोर आवाज़से।

করুণস্বরে। रोनीसी आवाज़में।

ভগ্নস্বরে। टूटे फूटे स्वरसे, अटकती आवाज़से।

কাতর বচনে। करुणामय बचनसे।

সর্ব্বত্র। सब जगह।

বহুদূরে। बहुत दूर पर।

এদিক ওদিক। इधर उधर।

অল্পবিস্তর। कम अधिक।

সর্ব্বোপরি। सबसे ऊपर।

नवां अध्याय।

পহিলা পাঠ।

ব্যায়াম।

কাল ও অবস্থা বিশেষে ব্যায়াম করা উচিত। ব্যায়ামে শরীর লঘু সুদৃঢ় হয়, কার্য্যে উৎসাহ জন্মে, অগ্নি বৃদ্ধি ও মেদ ধাতু ক্ষয় হয়। ব্যায়ামশীল ব্যক্তি বিরুদ্ধ কি বিদগ্ধ দ্রব্য আহার করিলেও সহজে পরিপাক পায় এবং অঙ্গশৈথিল্য, জরা প্রভৃতি ব্যায়ামশীল ব্যক্তিকে সহসা আক্রমণ করিতে পারে না। বলবান্ স্নিগ্ধ ভোজী এবং স্থূল ব্যক্তির পক্ষে ব্যায়াম অত্যন্ত উপকারী। ব্যায়ামের ন্যায় স্থৌল্য নাশক ক্রিয়া আর দ্বিতীয় নাই।

व्यायाम।

समय और अवस्था विशेष में कसरत करना उचित है। कसरतसे शरीर हल्का और मज़बूत होता है। काममें उत्साह होता है। अग्नि वृद्धि होती है तथा मेद धातु चय होता है। कसरती आदमीको विरुद्ध और विदग्ध भोजन भी सह-

जमें पचजाता है एवं अङ्ग शैथिल्य और बुढ़ापा प्रभृति कस-रती पर आक्रमण नहीं कर सकते। बलवान और चिकना भोजन करनेवाले तथा मोटे आदमोके लिये कसरत अत्यन्त उपकारी है। व्यायामके समान स्थूलता (मुटापा) नाशक दूसरा और उपाय नहीं हैं।

दूसरा पाठ।

তৈল মৰ্দ্দনম্।

তৈল মৰ্দ্দনে শ্ৰমের শান্তি ও বাতের উপশম হয়; দৃষ্টিশক্তি ও আয়ু বৃদ্ধি এবং শরীর পুষ্ট হয়; চৰ্ম্মের দৃঢ়তা ও শোভা সম্পাদিত হয়; সুনিদ্রা জন্মে এবং জরা আক্রমণ করিতে পারে না। মস্তকে, কর্ণ ও পদদ্বয়ে বিশেষরূপে তৈল ব্যবহার করা কৰ্ত্তব্য।

तेलकी मालिश।

तेल मलने से श्रमकी शान्ति और वातका उपशम होता है। दृष्टि-शक्ति और आयु एवं शरीर पुष्ट होता है। चमड़ा मज़बूत और शोभायमान होजाता है। अच्छी नींद आती है और बुढ़ापा आक्रमण नहीं कर सकता। सिर, कान और दोनों पैरोंमें विशेष रूपसे तेल मालिश कराना चाहिये।

तीसरा पाठ।

স্নানম্।

স্নানে শরীর পবিত্র হয়। বল, বীর্য্য, আয়ু ওজধাতু বৃদ্ধি পায় এবং শ্রম, স্বেদ ও দেহের মল বিদূরিত হয়।

স্নান করিবার সময় শরীরে ঈষৎ উষ্ণ জল ও মাথায় শীতল জল ব্যবহার করা কর্ত্তব্য। মাথায় উষ্ণ জল ব্যবহার করিলে কেশমূল শিথিল হয় এবং দৃষ্টি হ্রাস পায়। উষ্ণ জলে স্নান, দুগ্ধপান, যুবতী স্ত্রী সম্ভোগ, ও ঘৃতাদি দ্বারা স্নিগ্ধ অন্ন ভোজন সর্ব্বদা মানবগণের পক্ষে সুপথ্য।

स्नानम।

स्नानसे शरीर पवित्र होता है। बल, वीर्य्य, आयु और ओज धातुकी वृद्धि होती है तथा श्रम, पसीना और देहका मैल दूर होता है।

स्नान करनेके समय शरीर पर कुछ गर्म जल और शिर पर शीतल जल व्यवहार करना उचित है। माथे पर गरम जल व्यवहार करने से बालोंकी जड़ ढीली पड़ती है तथा नेत्र-ज्योति कम होजाती है। गरम जलसे स्नान, दूध पीना, युवती स्त्रीसे सम्भोग करना और घी वगैरः से चिकना भोजन करना मनुष्योंके लिये सदा हितकारी है।

চৌথা পাঠ ।

আহার ।

মানব শরীরে স্বাভাবিক নিয়মে এই চারি প্রকার ইচ্ছা জন্মিয়া থাকে। যথা—আহারের ইচ্ছা, পান করিবার ইচ্ছা, নিদ্রা ও সহবাসের ইচ্ছা। আহারের ইচ্ছা জন্মিলে যদি আহার করা না যায়, তাহা হইলে অঙ্গ মর্দ্দ, অরুচি, শ্রমবোধ, তন্দ্রা, দুর্ব্বলতা, বলক্ষয় ও ধাতুপাক লক্ষণ সমূহ পরিলক্ষিত হইতে থাকে।

যথাবিধি আহারে—দেহ ধারণ করে, প্রীতি ও বল জন্মায় এবং স্মরণ শক্তি, আয়ু, উৎসাহ, বর্ণ, ওজধাতু, জীবনীয় শক্তি ও শরীরের কান্তি বৃদ্ধি করে।

প্রাতঃকালে ও সায়ংকালে এই দুইবার মাত্র আহার করা উচিত। রসাদি ধাতু, কফাদি দোষ ও মল সমূহ সম্যক্ পরিপাক পাইয়া যখনই ক্ষুধার উদ্বেগ হয়, তখনই আহার করা কর্ত্তব্য।

আমাশয়ের দুই ভাগ অন্নাদি ভোজ্য বস্তু দ্বারা ও এক ভাগ জলদ্বারা পূর্ণ করিয়া চতুর্থ ভাগ বায়ু সঞ্চরণের জন্য খালি রাখিবে।

আহার ।

মনুষ্য শরীরমেং স্বাভাবিক নিয়ম অনুসার যে চার প্রকারকী ইচ্ছাএঁ হোতী হৈং। যথা—খানেকী ইচ্ছা, পীনেকী ইচ্ছা, সোনে ঔর স্ত্রী-সহবাসকী ইচ্ছা।, খানেকী ইচ্ছা

होने पर भोजन न दिया जाय तो शरीरमें दर्द, अरुचि, थकान, जँभाई, कमज़ोरी, बलका नाश और ग्लानि आदि धातुपाक के लक्षण होते हैं।

विधि सहित किया हुआ भोजन देहको धारण करता, प्रीति और बल पैदा करता एवं स्मरण-शक्ति, आयु, उत्साह, वर्ण, ओज, जीवनीय-शक्ति और शरीर की कान्तिकी वृद्धि करता है।

सबेरे और शाम को दो बार भोजन करना उचित है। रस आदि धातु, कफादि दोष और मल समूह परिपाक होने पर जब भूख लगे तभी खाना उचित है।

आमाशयके दो भाग अन्न आदि खानेकी चीज़ों द्वारा और एक भाग जल द्वारा भरकर, चौथा भाग वायुके घूमनेके लिये खाली रखना चाहिये।

पाँचवाँ पाठ।

এক ব্যক্তির একটী ঘোড়া ছিল। সে ঐ ঘোড়া ভাড়া দিয়া, জীবিকা নির্ব্বাহ করিত। গ্রীষ্মকালে, একদিন কোনও ব্যক্তি চলিয়া যাইতে যাইতে অতিশয় ক্লান্ত হইয়া ঐ ঘোড়া ভাড়া করিল। মধ্যাহ্নকাল উপস্থিত হইলে, সে ব্যক্তি

ঘোড়া হইতে নামিয়া খানিক বিশ্রাম করিবার নিমিত্ত ঘোড়ার ছায়ায় বসিল, তাহাকে ঘোড়ার ছায়ায় বসিতে দেখিয়া যাহার ঘোড়া সে বলিল, ভাল, তুমি ঘোড়ার ছায়ায় বসিবে কেন ? ঘোড়া তোমার নয়; ঐ আমার ঘোড়া আমি উহার ছায়ায় বসিব তোমায় কখনও বসিতে দিব না। তখন সে ব্যক্তি বলিল, আমি সমস্ত দিনের জন্য ঘোড়া ভাড়া করিয়াছি ; কেন তুমি আমায় উহার ছায়ায় বসিতে দিবে না ? অপর ব্যক্তি বলিল, তোমাকে ঘোড়াই ভাড়া দিয়াছি, ঘোড়ার ছায়া ত ভাড়া দি নাই। এইরূপে ক্রমে ২ বিবাদ উপস্থিত হওয়াতে উভয়ে ঘোড়া ছাড়িয়া দিয়া মারামারি করিতে লাগিল। এই সুযোগে ঘোড়া বেগে দৌড়িয়া পলায়ন করিল, আর উহার সন্ধান পাওয়া গেল না।

किसी शख्स के एक घोड़ा था। वह इस घोड़े को भाड़े पर देकर जीविका निर्व्वाह करता था। ग्रीष्म कालमें, एकदिन, किसी शख्सने जाते जाते बहुतही थंक कर यह घोड़ा भाड़े किया। मध्याह्नकाल होने पर वह शख्स घोड़ेसे उतर कर, थोड़ासा आराम करनेके लिये घोड़ेकी छायामें बैठ गया। उसे घोड़ेकी छाया में बैठते देख कर घोड़ेका मालिक बोला :—भला, तुम घोड़ेकी छाया में क्यों बठे ? घोड़ा तुम्हारा नहीं है ; यह मेरा घोड़ा है, मैं उसकी छायामें बैठूँगा। तुमको हरगिज़ न बैठने दूंगा। तब वह शख्स बोला, मैंने सारे दिनके लिये घोड़ा भाड़े किया है ; तुम मुझे इसकी छायामें क्यों न बैठने दोगे ? दूसरा शख्स बोला, तुमको घोड़ा ही भाड़े दिया है घोड़े की छाया तो भाड़े नहीं दी। इस तरह, क्रम क्रमसे विवाद होनेपर, दोनोंने घोड़ा छोड़ दिया और मारपीट करने लगे। इसी सुयोगमें घाड़ा ज़ोरसे दौड़ कर भाग गया। फिर उसका पता न मिला।

৪র্থ পাঠ।

গোপালপুর নামক এক গ্রামে হরিদাস দত্ত নামে এক দরিদ্র গৃহস্থ বাস করিতেন। হরিদাসের অন্ন সংস্থানের কোন উপায় ছিল না। একদিন সে নির্জ্জনে বসিয়া নিজ স্ত্রী পুত্রের ভবিষ্যতে কি হইবে, তাহা চিন্তা করিতেছে, এমন সময় ঐ গ্রামের একটী সম্ভ্রান্ত লোক আসিয়া বলিলেন, "হরিদাস তুমি কি ভাবিতেছ ? তুমি সর্ব্বদা এরূপ দুর্ভাবনা করিলে পাগল হইবে। কোন ভাবনা না করিয়া ধনোপার্জ্জনে মন দিলে দিন দিন নিশ্চই তোমার উন্নতি হইবে। আমি তোমার উপকার করিতেছি। আমার সহিত আইস, আমি তোমাকে কলিকাতায় লইয়া গিয়া, কোন মহাজনের কোন কার্য্যে নিযুক্ত করিয়া দিতেছি। তাহা হইলে অল্প সময়ের মধ্যেই তোমার দরিদ্রতা দূর হইবে।"

गोपालपुर नामक एक गाँवमें हरिदास दत्त नामका एक दरिद्र गृहस्थ रहता था। हरिदासके अन्नसंस्थानका कोई उपाय न था। एक दिन वह एकान्तमें बैठा हुआ यह सोंच रहा था कि मेरे स्त्री पुत्रोंका भविष्यत्‌में क्या हाल होगा। इसी समय, इस गाँवका एक सम्भ्रान्त व्यक्ति आकर बोला "हरिदास तुम क्या सोचते हो ? तुम सदा इस तरह दुर्भा-वना करनेसे पागल होजाओगे। किसी तरहका विचार न कर धनके कमाने में दिल लगाने से दिन दिन निश्चयही तु-म्हारी उन्नति होगी। मै तुम्हारा उपकार करता हुँ मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें कलकत्ते लेचलकर किसी महाजन के यहाँ किसी कामपर नियुक्त करा दुँगा। ऐसा होनेसे थोड़े समय में ही तुम्हारा दरिद्र दूर हो जायगा।

सातवाँ पाठ।

শৃগাল ও দ্রাক্ষাফল।

একদা এক ক্ষুধার্ত্ত শৃগাল আহারান্বেষণে ইতস্ততঃ ভ্রমণ করিতে করিতে কোনও স্থানে বেড়ার উপর কয়েকটী দ্রাক্ষাফল দেখিতে পাইল। সুমিষ্ট ও সুপক্ক দাদ্রাফল

দেখিয়া শৃগালের বড় লোভ জন্মিল, কিন্তু সে বহু চেষ্টা করিয়াও সেই উচ্চ স্থানে উঠিতে পারিল না। অবশেষে অত্যন্ত পরিশ্রান্ত ও নিরাশ হইয়া বলিতে বলিতে চলিয়া গেল, "আঙ্গুর ফল অম্ল রসে পরিপূর্ণ ও অপক্ক, অতএব উহার জন্য চেষ্টা না করাই শ্রেয়ঃ"।

स्यार और अंगूर।

एक दफा एक भूखे स्यारने आहार की तलाश में इधर उधर घूमते घूमते किसी स्थान पर बेड़ के ऊपर कुछ अँगूर देखे। मीठे और खूब पके हुए अँगूर देख कर स्यारका मन ललचा गया। किन्तु बहुत सी चेष्टायें करने पर भी वह ऊँचे स्थानपर चढ़ न सका। अन्तमें बहुत थकित और निराश होने पर वह यह कहता हुआ चला गया, "अँगूर खट्टे और कच्चे हैं, अतएव इनके लिये चेष्टा न करना ही अच्छा है।"

আঠবাঁ পাঠ।

কুকুর ও প্রতিবিম্ব।

একটা কুকুর, একখণ্ড মাংস মুখে করিয়া নদী পার হইতেছিল। নদীর নির্ম্মল জলে তাহার যে প্রতিবিম্ব পড়িয়াছিল, সেই প্রতিবিম্বকে অন্য কুকুর স্থির করিয়া, মনে মনে বিবেচনা করিল; এই কুকুরের মুখে যে মাংসখণ্ড আছে কাড়িয়া লই; তাহা হইলে আমার দুই খণ্ড মাংস হইবেক।

এইরূপ লোভে পড়িয়া মুখ বিস্তার করিয়া, কুকুর যেমন সেই অলীক মাংস খণ্ড ধরিতে গেল অমনি উহার মুখস্থিত মাংস-খণ্ড জলে পড়িয়া স্রোতে ভাসিয়া গেল। তখন সে, হতবুদ্ধি হইয়া, কিয়ৎক্ষণ স্তব্ধ হইয়া রহিল, অনন্তর, এই ভাবিতে ভাবিতে নদী পার হইয়া চলিয়া গেল; যাহারা লোভের বশীভূত হইয়া কল্পিত লাভের

প্রত্যাশায় ধাবমান হয়, তাহাদের এই দশাই ঘটে।

कुत्ता और प्रतिविम्ब।

एक कुत्ता, माँसका एक टुकड़ा लिये हुए नदी पार कर रहा था। नदीके निर्म्मल जलमें उसकी परछाईं पड़ी। उस परछाईंको दूसरा कुत्ता समझकर मनमें विचारने लगा, इस कुत्तेके मुँहमें जो माँसका टुकड़ा है उसे निकाल लूँ तो मेरे पास माँसके दो टुकड़े हो जायँ।

इस तरह लोभमें पड़कर उसने मुँह फैलाया, कुत्ता जिस समय परछाईंरूपी माँस-खण्डको पकड़ने लगा उस समय उसके मुँहका माँस-खण्ड जलमें गिर गया और धारामें बह गया। उस समय वह हतबुद्धि होकर कुछ क्षणतक स्तब्ध हो गया। पीछे यह विचारता विचारता नदी पार चला गया, कि जो लोभके वशीभूत होकर कल्पित लाभकी आशासे दौड़ते हैं उनकी यही दशा होती है।

নবাঁ পাঠ।

নেকড়েবাঘ ও মেষশাবক।

এক ব্যাঘ্র, পর্ব্বতের ঝরণায় জল পান করিতে করিতে, দেখিতে পাইল, কিছু দূরে, নীচের দিকে, এক মেষশাবক জলপান করিতেছে। সে দেখিয়া মনে ২ কহিতে লাগিল, এই মেষের প্রাণ সংহার করিয়া, আজিকার আহার সম্পন্ন করি ; কিন্তু বিনা দোষে এক জনের প্রাণবধ করা ভাল দেখায় না; অতএব একটা দোষ দেখাইয়া, অপরাধী করিয়া উহার প্রাণবধ করিব।

এই স্থির করিয়া, ব্যাঘ্র সত্বরগমনে মেষশাবকের নিকট উপস্থিত হইয়া কহিল, অরে দুরাত্মন্! তোর এত বড় আস্পর্দ্ধা যে, আমি জল পান করিতেছি দেখিয়াও, তুই জল ঘোলা করিতেছিস্। মেষ শুনিয়া ভয়ে কাঁপিতে কাঁপিতে কহিল, সে কি

মহাশয়! আমি কেমন করিয়া আপনার পান করিবার জল ঘোলা করিলাম। আমি নীচে জল পান করিতেছি, আপনি উপরে জল পান করিতেছেন। নীচের জল ঘোলা করিলে উপরে জল ঘোলা হইতে পারে না।

বাঘ কহিল, সে যাহা হউক, তুই এক বৎসর পূর্ব্বে আমার বিস্তর নিন্দা করিয়াছিলি; আজি তোরে তাহার সমুচিত প্রতিফল দিব। মেষশাবক কাঁপিতে কাঁপিতে কহিল, আপনি অন্যায় আজ্ঞা করিতেছেন; এক বৎসর পূর্ব্বে আমার জন্মই হয় নাই; সুতরাং তৎকালে আমি আপনকার নিন্দা করিয়াছি, ইহা কিরূপে সম্ভবিতে পারে। বাঘ কহিল, হাঁ বটে, সে তুই নহিস, তোর বাপ আমার নিন্দা করিয়াছিল। তুই কর্, আর তোর বাপ করুক, একই কথা। আর আমি তোর কোন

ওজর শুনিতে চাহি না ; এই বলিয়া, বাঘ ঐ অসহায় দুর্ব্বল মেষশাবকের প্রাণসংহার করিল।

भेड़िया और भेड़का बच्चा।

एक भेड़ियेने, पहाड़के झरनेपर, जल पीते पीते देखा कि कुछ दूरपर, नीचे की तरफ़, एक भेड़का बच्चा जल पीता है। वह उसे देखकर मनमें कहने लगा कि भेड़के प्राणनाश करके आजका आहार जुटाऊँ। किन्तु बिना दोष एक जीवका प्राणनाश करना अच्छा नहीं मालुम होता ; अतएव एक दोष दिखाकर और अपराधी बनाकर उसका प्राणनाश करूँगा।

यह बात स्थिर करके, भेड़िया जल्दी २ चलकर भेड़के बच्चेके पास उपस्थित होकर कहने लगा, अरे दुरात्मा ! तुझे इतना घमण्ड है कि मुझे जल पीते देखकर भी तू जलको गदला करता है। भेड़का बच्चा यह बात सुनकर काँपते काँपते कहने लगा, वह क्या, महाशय ! मैंने आपके पीनेका जल किस तरह गदला किया ? मैं तो नीचे जल पीता हूँ और आप ऊपरका जल पीरहे हैं। नीचेका जल गदला करनेसे ऊपरका जल गदला नहीं हो सकता।

भेड़िया कहने लगा, जो हो, तूने एक वर्ष पहले मेरी बहुत निन्द्रा की थी, आज तुझे उसका समुचित प्रतिफल दूँगा। भेड़का बच्चा काँपते काँपते कहने लगा, आप अन्याय कर रहे हैं। एक वर्ष पहिले तो मेरा जन्म ही नहीं हुआ था। सुतरां उस समय मैंने आपकी निन्दा की, यह किस भाँति सम्भव हो सकता है। भेड़िया कहने लगा, हाँ ठीक है ठीक है। तू वह नहीं है, तेरे बापने मेरी निन्दा की थी। तू करे चाहें तेरा बाप करे एक ही बात है। मैं तेरा कोई और उज्र सुनना नहीं चाहता। ऐसा कहकर भेड़िये ने उस असहाय दुर्बल भेड़के बच्चे के प्राणनाश कर दिये।

R.C. Tandan.
RAM-BHAVAN.
SHAHZADPUR

कलकत्ते की सुप्रसिद्ध

हरिदास एण्ड कम्पनी।

की

अव्यर्थ रामबाण औषधियां

नारायण तेल।

(वायुरोगोंका दुश्मन)

इस जगत् प्रसिद्ध "नारायण तेल" को कौन नहीं जानता? वैद्यक शास्त्र में इसको खूब ही तारीफ़ लिखी है। आज़माने से हमने भी इसे अनेक अँगरेज़ी दवाओं से अच्छा पाया है। लेकिन आजकल यह तेल असली कम मिलता है, क्योंकि अव्वल तो इसको बहुत सी जड़ी बूटियाँ मुश्किलसे भारी खर्चमें मिलती हैं। दूसरे, इसके तैयार करनेमें भी बड़ी मिहनत करनी पड़ती है। इसी वजहसे कलकत्तिये कविराज इसे बहुत महँगा बेचते हैं। हमारे यहाँ यह तेल बड़ी सफाई और शास्त्रोक्त विधिसे तैयार किया जाता है। यही कारण है कि अनेक देशी वैद्यलोग इसे हमारे यहाँसे ले जाकर अपने रोगियोंको देते और धन तथा यश

कमाते हैं, यह तेल हमारा अनेक बारका आजमाया हुआ है। हज़ारों रोगी इससे आराम हुए हैं।

—हम विश्वास दिलाते हैं कि इसको लगातार मालिश कराने से शरीर का दर्द, कमर का दर्द, पैरोंमें फूटनी होना, शरीर का दुबलापन या रुखापन, शरीरकी सूजन अर्द्धाङ्ग, लकवा मारजाना, शरीर का हिलना, काँपना, मुखका खुला रह जाना, बन्द हो जाना, शरीर दण्डे के समान तिरछा हो जाना, अङ्गका सूनापना, झनझनाहट, चूतड़ से टखनेतक का दर्द, आदि समस्त वायुरोग निस्सन्देह आराम होजाते हैं। यह तेल भीतरी नसोंको सुधारता, सुकड़ी नसों को फैलाता और हड्डी तक को नर्म कर देता है, तब बादी (वायु) के नाश करनेमें क्या सन्देह है? गठिया और शरीर का दर्द वगैरः आराम करने में तो इसे नारायणका सुदर्शन चक्र ही समझिये। दाम आधपाव तेलका १) मात्र है।

दादकी मलहम।

यह मलहम दादके लिये बहुत ही अच्छी है। ५।६ बार धीरे धीरे मलनेसे दाद साफ़ हो जाते हैं। लगती बिलकुल नहीं। लगाने में भी कुछ दिक्कत नहीं। दाम ।) डि०।

कर्पूरादि मलहम।

यह मलहम खुजली पर, जिसमें मोती समान फुन्सियाँ हो जाती हैं, अमृत है। आज़मा कर अनेक बार देख चुके

हैं कि, इसके लगानेसे गीली खुजली, जले हुए घाव, काले, कटे हुए घाव, फोड़े फुन्सी तथा औरतों के गुप्तस्थानकी खुजली और फुन्सियाँ निश्चय ही आराम हो जाती हैं। कलम में ताक़त नहीं है, जो इसके पूरे गुण वर्णन कर सके। दाम १ डि० ।≈)

शिर शूलनाशक लेप।

इसको ज़रासे जलमें पीसकर मस्तक पर लेप करने से मन-भावन सुगन्ध निकलती है और हर प्रकारके सिरदर्द फ़ौरन आराम हो जाते हैं। बुखार और गर्मी से पैदा हुए शिरदर्द में तो यह रामबाण ही है। दाम १ डि० ।≈) आना

सूचना।

आध आनेका टिकट भेजकर बड़ा सूचीपत्र मँगा देखिये।

पता—हरिदास एण्ड कम्पनी

२०१ हरीसन रोड कलकत्ता।

विज्ञापन

स्वास्थ्यरक्षा ।

(द्वितीय आवृत्ति)

यह वही पुस्तक है जिस की तारीफ़ समस्त हिन्दी समाचार पत्रोंने दिल खोल कर की है। इस की उत्तमता के लिये यही प्रमाण काफ़ी है कि इसका दूसरा संस्करण छप गया और बिक भी गया। अब तीसरेकी तय्यारियाँ होरही हैं। जो कोक शास्त्र की ज़रूरी बातों को जानना चाहते हैं, जो संसार का सच्चा सुख भोगना चाहते हैं, जो बहुत दिनोंतक जीना चाहते हैं, जो अपने घरका इलाज आप ही करना चाहते हैं, उन्हें यह पुस्तक अवश्य ही दिल लगाकर पढ़नी चाहिये। इसमें जो विषय लिखे गये हैं वह सभी आज़मूदा हैं। मनुष्य को अपने सुख के लिये जो कुछ जानने की ज़रूरत है वह सभी इस में लिखा गया है। जो संसारमें सुखसे जीवन का बेड़ा पार करना चाहते हैं, उन्हें यह अनमोल पुस्तक लोभ त्यागकर अवश्य ख़रीदनी चाहिये। छपाई सफ़ाई इतनी सुन्दर है कि पुस्तक को छाती से लगाये बिना जी नहीं मानता। दाम १॥) डाकखर्च ।) सुन्दर फैशनेबिल जिल्दवाली का दाम २) और डाकखर्च ।)

अंगरेजी शिक्षा

प्रथम भाग।

(चतुर्थ आवृति)

आजतक ऐसी किताब नहीं छपी। इस किताबके पढ़ने से थोड़ी सी देवनागरी जाननेवाला भी बिना गुरु के अँगरेज़ी अच्छी तरह सीख सकता है। इसके पढ़ने से २।३ महीने में ही साधारण अंगरेज़ी बोलना, तार लिखना, चिट्ठी पर नाम करना, रसीद और हुण्डी वगैर: लिखना बखूबी आसक्ता है। किताब की छपाई सफ़ाई मनोमोहिनी है। हर एक अँगरेज़ी शब्द का उच्चारण दिया गया है। इसमें कूड़ा करकट नहीं भरा गया है। इस पुस्तक में वही बातें लिखी गई हैं जो व्योपारियों, रेलमें काम करनेवालों, डाकखाने में काम करनेवालों तथा तार घर आदि में काम करनेवालों के काममें आती हैं। दाम १५० सफों की पोथी का ॥) डाक-खर्च ⁄)

अंगरेजी शिक्षा

दूसरा भाग।

जिन्होंने हमारा पहिला भाग पढ़ लिया है या जिन्होंने कोई दूसरी पुस्तक थोड़ी बहुत पढ़ली है उनके लिये हमारी

"अँगरेज़ी शिक्षा" का दूसरा भाग निहायत उपयोगी है। इसमें अँगरेज़ी व्याकरण(English Grammar) बड़ी उत्तमतासे समझाया गया है। आजतक कोई पुस्तक हमारी नज़र नहीं आई, जिसमें इससे उत्तम काम किया गया हो।

व्याकरण वह विद्या है जिसके सीखे बिना किसी भी भाषाका आना महा कठिन है। कितनी ही किताबें क्यों न पढ़लो ; जबतक व्याकरण का ज्ञान न होगा तबतक पढ़नेवाले का हृदय सूना ही रहेगा ; लेकिन व्याकरण है बड़ा कठिन विषय।

इस कठिन विषय को ग्रन्थकर्त्ताने अत्यन्त सरल कर दिया है। हिन्दी जाननेवाला, अगर शान्त स्थान में, एकाग्रचित्तसे, इसका अभ्यास करे तो बहुत जल्दी होशियार हो सकता है। इसके सीख जाने पर उसे चिट्ठियाँ लिखना, बाँचना, अँगरेज़ी समाचारपत्र पढ़ना बिल्कुल आसान हो जायगा। हम दावेके साथ कहते हैं कि हमारी अँगरेज़ी शिक्षाके चारों भाग पढ़ लेने पर जिसे अँगरेज़ी में अखबार पढ़ना, चिट्ठियाँ वग़ैरः धड़ाके से लिखना न आजायगा तो हम दुगुनी क़ीमत वापिस देंगे। मगर किताब मँगा लेने से ही कोई पण्डित नहीं हो सकता, उसका याद करना भी ज़रूरी है। दाम केवल १) रुपया और डाक महसूल ।≤) है।

———

अंगरेजी शिक्षा

तीसरा भाग ।

इस भाग में विशेषण और सर्वनाम (Adjective और Pronoun) दिये गये हैं और उनको इतने विस्तार से समझाया है कि मूर्ख से मूर्ख भी आसानी से समझ सकेगा। इसके बाद सब प्राणियों की बोलियाँ तथा संज्ञा और विशेषणों के चुने हुए जोड़े दिये हैं जिनके याद करनेसे अखबार नॉविल आदि पढ़नेमें सुभीता होगा। इनके पीछे उपयोगी चिट्ठियाँ और उनका अनुवाद दिया गया है। शेषमें, शब्दोंके संक्षिप्त रूप (Abbreviations) बहुतायतसे दिये हैं। यह भाग दूसरे भाग से भी उत्तम और थोड़ा है। दूसरे भागके आगेका सिलसिला इसी भागमें चलाया गया है। दाम १) डाक खर्च ≶)

अंगरेजी शिक्षा।

चौथा भाग ।

हमारी लिखी हुई अँगरेजी शिक्षाके तीनों भागोंको पबलिक ने दिलसे पसन्द किया है। अत: हमें अब प्रशंसा करनेकी आवश्यकता नहीं है। इतना ही कहना है कि अँग-

रेज़ी व्याकरण जितना बाक़ी रह गया था वह सभी इस भागमें खतम कर दिया गया है ; साथ ही और भी अनेक उपयोगी विषय दे दिये गये हैं। दाम १) डाकखर्च ≠)

हिन्दी बंगला शिक्षा

बङ्गला साहित्य आजकल भारत की सब भाषाओंसे ऊँचे दर्जे पर चढ़ा हुआ है। उसमें अनेक प्रकार के रत्नोंका भण्डार है। अत: हर.शख्स को इच्छा होती है कि हम उन ग्रन्थों को देखें और आनन्द लाभ करें। किन्तु बँगला सीखनेका उपाय न होनेसे लोगोंके दिलकी मुराद दिलमें ही रह जाती है। हमारे पास ऐसी पुस्तक की, जिसके सहारे से हिन्दी जाननेवाला बँगला बोलना, लिखना और पढ़ना जान जावे, हज़ारों माँगें आईं। मगर ऐसी पुस्तक न तो हमारे यहाँ थी और न बाज़ारमें ही मिलती थी।

अब हमने सैकड़ों रुपया खर्च करके यह पुस्तक हिन्दी और बँगलामें छपाई है। रचना-शैली इतनी उत्तम है कि मूर्ख भी इसको पढ़ने से बिना गुरुके बँगला का अच्छा ज्ञान सम्पादन कर सकता है।

जिन्हें बँगला सीखने का शौक़ हो, जिन्हें बँगला के अपूर्व्व रत्न देखने हों, जिन्हें बँगाल देशमें रोज़गार व्योपार

और नौकरी करनी हो, उन्हें यह पुस्तक ख़रीद कर बँगला अवश्य पढ़नी चाहिये।

इस किताब में एक और खूबी है कि बँगला जाननेवाला इससे हिन्दी भाषा और हिन्दी जाननेवाला बंगला सीख सकता है। ऐसी उत्तम पुस्तक आजतक हिन्दीमें नहीं निकली। ख़रीददारों को जल्दी करनी चाहिये। देर करने से यह अपूर्व्व रत्न हाथ न आवेगा। दाम ॥) डाक खर्च)

अकलमन्दीका खज़ाना

यह पुस्तक यथा नाम तथा गुण है। ऐसी कौन सी नीति और चतुराई की बात है जो इस पुस्तक में नहीं है। भारतवर्षके प्राचीन नीतिकारों की नीति, गुलिस्ताँके चुनीदा उपदेश तथा और भी अनेक चतुराई सिखानेवाली बातें इसमें कूट कूट कर भरी गयी हैं।

जो दुनिया में किसीसे धोखा खाना नहीं चाहते, जो सभा-चातुरी सीखना चाहते हैं, जो विदुर, कणिक, चाणक्य, शुक्राचार्य्य की नीतिका स्वाद चखना चाहते हैं, जो शेख सादी की अपूर्व्व नीतिका मज़ा लूटना चाहते हैं, जो चीन देश के विद्वान बुद्धिमान कॉन्फ्यूशियस की अक्लमन्दी की

अद्भुत बातें जानना चाहते हैं, जो संसारमें सुखसे ज़िन्दगी बिताना चाहते हैं, उन्हें यह पोथी अवश्य ख़रीदनी चाहिये।

आज तक ऐसी उत्तम पुस्तक हिन्दी में नहीं निकली। यह पुस्तक हिन्दी में नयी ही निकली है। इस पुस्तकके दस पाँच दफ़े दिल लगाकर पढ़ लेने पर, महामूर्ख भी महा बुद्धिमान हो जावेगा। जिन्हें अपने लड़कों को महा चतुर और अक्लका पुतला बनाना हो वे इस पुस्तक को अवश्य खरीदें। दाम १) डाक खर्च ॐ)

॥ राजसिंह ॥

वा

चंचलकुमारी।

यह राजसिंह सचमुच उपन्यासोंका राजा है, जिस प्रकार से बनका राजा सिंह बनैले जन्तुओंपर अपना पूरा प्रभाव रखता है उसी तरह यह भी उपन्यासोंमें "सिंह" हो रहा है। भारतवर्ष की इतनी कायापलट हो जानेपर भी अभीतक चित्तोरका नाम नहीं गया है, अभीतक चितौरकी उज्ज्वल कीर्त्ति दिग्दिगान्तरमें गूँज रही है, राजपूतानेकी स्वाधीनता लोप हो जानेपर भी अभी तक चितौरका माथा ऊँचा हो रहा है। उसी प्रकारसे हमारे उपन्यासके नायक "राजसिंह"का

नाम भी इतिहास जाननेवालोंके आगे छिपा नहीं है। राज-सिंहकी वीरता, धीरता, चतुरता, बुद्धिमत्ता, प्रतिज्ञापालनकी पूरी पूरी सत्ता, अचल प्रतिज्ञा, दूरदर्शिता, प्रजापालनमें तत्-परता और निर्लोभता अभी तक उनका नाम निष्कलङ्क कर रही है। हमारा यह "राजसिंह" ऐतिहासिक शिक्षा देने-वाला एक रत्न है। जिस औरङ्गज़ेबकी कूटनीतिके आगे समूचा भारत थरथराता था, जिस मुगल सम्राट औरङ्गज़ेबकी अमल्दारीमें हिन्दू-राजे अपनी बहन बेटी व्याह देना अपना माथा ऊँचा करना समझते थे, जिस औरङ्गज़ेबके थोड़ेसे इशारेमें ही बड़े बड़े राजे महाराजे उनके पैरोंके नीचे लोटते थे, और जिस प्रतापी मुगल सम्राटने बड़े बड़े राजा-ओंसे भी "जज़िया" नामक कर वसूल कर लिया था, उसी प्रतापी औरङ्गज़ेबके चंगुलसे एक राजपूत हिन्दू सुन्दरीको बचानेके लिये राजसिंहकी अटल प्रतिज्ञाका पूरा पूरा ख़ाका इसमें खींचा गया है। इसको पढ़नेसे ही प्यारे पाठकोंको मालूम हो जायगा कि राजपूतों की प्रतिज्ञा कैसी अटल होती थी।

इस उपन्यासकी सभी बातें आश्चर्य्यमें डालनेवाली, कुतूहल को बढ़ानेवाली और शिक्षाकी देनेवाली हैं। रूप नगरके राजा विक्रमसिंहका सुन्दर राज्य, राजकुमारी चञ्चलकुमारी का एक तस्वीर देखकर राजसिंहपर मोहित होना, अपनी तस्वीरका अनादर सुनकर औरङ्गज़ेबका क्रोधित होना,

हज़ारों सिपाही भेजकर चञ्चलकुमारीको बुलवाना, चञ्चलका राजसिंहको विचित्र पत्र भेजना, राजसिंहका विचित्र रीतिसे मुग़लोंके हाथसे चंञ्चलको छुड़ाना, माणिकलालकी कूट बुद्धि, औरङ्ग़ज़ेबका भयानक क्रोध, विक्रमसिंहका भारी परिताप, चञ्चलकी सखी निर्मलकी अद्भुत कार्य्यावली, औरङ्गज़ेबकी कन्या जेबुन्निसाका मुबारकसे गुप्तप्रेम, औरङ्गजेबके शाही महलकी गुप्त घटनायें ; राजसिंहका औरङ्गज़ेबके नाम पत्र भेजना, औरङ्गज़ेबका और भी क्रोधित होना, राजसिंहसे औरङ्गज़ेबकी भयानक लड़ाई, तीन तीन बार औरङ्गज़ेबका हारना आदि घटनायें पढ़ते पढ़ते पाठक उपन्यास-मय हो रहेंगे। ऐसा उत्तम मनोरम और सच्ची घटनाओंसे भरा हुआ उपन्यास बहुत कम देखनेमें आवेगा। सच तो यह है कि यह उपन्यास उपन्यासोंमें मुकुट हो रहा हैं। अवश्य पढ़िये, पहिलेही की भाँति सर्व साधारणको शिक्षा दिलानेके लिये ३०६ पृष्ठोंकी उत्तम पुस्तकका दाम कुल ॥) डाक महसूल ≈)
रक्खा गया है।

मानसिंह

वा

कमलादेवी।

यह उपन्यास मुसल्मानी अमल्दारी की चालोंका बाय-

लोप और हिन्दू राजाओंके नामका पूरा पूरा उदाहरण दिखा देनेवाला है। हिन्दू-संसार में ऐसे बहुत कम मनुष्य होंगे, जिन्होंने अकबरके दाहिने हाथ महाराज मानसिंहका नाम न सुना होगा। यह ग्रन्थ उन्हीं ऐतिहासिक वीरकी विचित्र कार्यावलीसे भरा हुआ है। मानसिंहके नामका कलङ्क, अपनी बहनको अकबरसे व्याह देना, महाराणा प्रतापका साहसपूर्ण उद्धार, हेमलताका विचित्र प्रेम, एक बाज़ीगरकी विचित्र चतुराई, बहराम खाँका कपट, नूरजहाँका सलीमसे प्रेम, शेरशाह तथा सलीमका बाहुयुद्ध, शेरखाँका नूरजहाँसे विवाह, कमलादेवीका दरबार, देवसिंहकी भीषण वीरता, राजपूतोंमें आपस की फूट, कमलादेवीका गुप्त प्रेम, इसी गुप्त-प्रेमके कारण मानसिंहकी ख़राबी, महाराज मानसिंह और हेमलताका सच्चा प्रेम, मानसिंहके दुराचार, हेमलताकी निराशा, अरावली पर्वतपर फिर मानसिंह और मुग़लोंका भयानक युद्ध, मानसिंहकी सच्ची वीरता और रणकौशल आदि रहस्यमय घटनाओंको पढ़ते पढ़ते पाठक अपने आपको भूल जायँगे। ग्रन्थ बड़ा ही रोचक और भावपूर्ण हुआ है। ऐतिहासिक घटनाओंका इस सुन्दरतासे वर्णन किया गया है कि पढ़नेवालोंके हृदयमें एक एक बात चुभ जाती है। सच तो यह है कि भारतवर्षकी इस दीन अवस्थामें ऐसे ही उपन्यासोंकी आवश्यकता है जो पढ़नेवालोंके हृदयपर उनके पूर्व पुरुषों का चित्र अङ्कित कर सकें। आशा है हमारा यह

उपन्यास वही काम कर दिखायेगा। इस उपन्यासको पढ़ते समय पाठकोंको परिणामपर भी अवश्य ध्यान रखना चाहिये। हम अब इसकी प्रशंसामें अधिक लिखना व्यर्थ समझते हैं; क्योंकि यह अपना नमूना आपही है। यदि आपलोग इसे मँगाकर ध्यान देकर पढ़ेंगे; तो आपलोगोंको मालूम हो जायगा कि विज्ञापनका एक एक अक्षर सत्य है। अवश्य पढ़िये, ऐसा अवसर बार बार हाथ नहीं आता। सर्व साधारणकी सुभीतेके लिये २५६ पृष्ठोंकी पुस्तकका दाम कुल ॥ﺇ रक्खा गया है। डाकमहसूल ﺇ

गल्पमाला

यह पुस्तक हाल में ही प्रकाशित हुई है। इस में एक से एक बढ़ कर मनोरञ्जक और उपदेश पूर्ण दस कहानियाँ लिखी गयी हैं। पढ़ना आरम्भ करने पर छोड़ने को जी नहीं चाहता। हिन्दीके अच्छे अच्छे विद्वानोंने इस पुस्तक की प्रशंसा की है। पढते समय कभी करुणाकी नदी लहराती है। कभी प्रेमका समुद्र उमड़ने लगता है। कभी पुण्यकी जय देख, हृदय में पवित्र भावका सञ्चार होता है और कहीं पाप के कुफल को देख कर परमात्मा के अटल न्यायकी महिमा प्रत्यक्ष आँखोंके आगे दिखाई देने लगती है। इस उपन्यासोंके पढ़ने में जो आनन्द हो सकता है, वह केवल गल्पमाला ही से मिल सकता है। दाम ।ﺇ डाकखर्च ﺇ

बादशाह लियर

यह विलायतके जगद्विख्यात कवि शेक्सपियर के "किंग-लियर" नामक नाटक का गद्य में बहुत ही मनोमोहन और रोचक अनुवाद है। एकबार पढ़ना आरम्भ करके बिना खतम किये पुस्तक के छोड़ने को जी नहीं चाहता। शेक्स-पियर ने बादशाह लियर और उसकी तीन कन्याओंका चरित्र बहुत ही उत्तम रूप से लिखा है। मनोरञ्जन होनेके अलाव: इस पुस्तक से एक प्रकार की शिक्षा भी मिलती है। पढ़ते पढ़ते कभी हँसी आती है। कभी बूढ़े बादशाह लियर की दुर्दशा का हाल पढ़ कर आखोंमें आंसू भर आते हैं। हिन्दी-प्रेमियोंको यह पुस्तक भी अवश्य ही देखनी चाहिये। दाम ।) डाकखर्च ।)

गुलिस्तां

यह वही पुस्तक है जिसकी प्रशंसा तमाम जगत् में हो रही है। वलायत, जरमनी, फ्रान्स, चीन, जापान और हिन्दु-स्तानमें सर्व्वत्र इस पुस्तकके अनुवाद हो गये हैं। लेकिन अफ़सोस की बात है कि बेचारी हिन्दी में इसका एक भी पूरा अनुवाद नहीं हुआ। इसके रचयिता शेख़सादीने इसमें एक एक बात एक एक लाख रुपये की लिखी है। वास्तव

में यह पुस्तक अनमोल है। इसी कारण से यह पुस्तक यहाँ मिडिल, ऐंट्रेन्स,एफ० ए० बी० ए० तक में पढ़ाई जाती है। इस की नीतिपर चलनेवालामनुष्य सदा सुख से रह कर जीवन का बेड़ा पार कर सकता है। मनुष्य मात्र को यह पुस्तक देखनी चाहिये। इसका अनुवाद सरल हिन्दीमें हुआ है। छपाई सफ़ाई भी देखने लायक है। दाम १) डाकखर्च ॥)

राधाकान्त

(उपन्यास)

आज कहने को तो अनेक उपन्यास निकलते हैं किन्तु वह सब रद्दी हैं। उनसे पाठकोंके मन और चरित्र के ख़राब होनेके सिवाय कोई लाभ नहीं है। इसके पढ़ने से एक अमीर की सच्ची घटना आँखों के सामने आजाती है; आदमी धनमत्त होकर कैसी कैसी ठोकरें खाता है; खोटी संगति में पड़ कर,धनवानोंके लड़के कैसे ख़राब हो जाते हैं; खुशामदी लोग बड़े,आदमियों को कैसी मिट्टी ख़राब करते हैं; जब तक धन हाथमें रहता है तब तक खुशामदी मधुमक्खियों की तरह चिपटे रहते हैं धन स्वाहा होते ही वही बात भी नहीं पूछते; रन्डियाँ कैसी मतलबी और धन की प्रेमी होती हैं और सच्चे और आदर्श मित्र कैसे होते हैं।

इस पुस्तकके देखने से उपरोक्त विषयों के सिवाय ईश्वर में प्रेम होने, ईश्वर पर एक मात्र भरोसा करने, विपत्तिकाल में धैर्य धारण करने की युक्तियाँ भी मालुम होंगी। अमीरों को तो इस पुस्तक को अवश्य ही बालकों को दिखाना चाहिये। इन्हीं बातों के न जानने और ऐसी पुस्तकों के न पढ़ने से ही लाख के घर खाक में मिल जाते हैं। पुस्तक अनमोल है। छपाई भी इतनी सुन्दर है कि लिख नहीं सकते! दाम ॥) डाकखर्च ≠)

भारत में पोर्च्यूगीज़।

(इतिहास)

यह एक पुराना इतिहास है। इस में यह बात खूब ही सरल भाषा में दिखायी गयी है कि पहले पहल फिरङ्गी लोग भारत में कैसे आये, उन्होंने कैसे भारत का पता लगाया। सब से पहले भारत में आनेवाले फिरङ्गी को सात समन्दर चौदह नदियाँ पार कर के भारत की खोज में आने के समय कैसे कैसे कष्ट उठाने पड़े। फिरङ्गियों (पोर्च्यू-गीज़ों) ने दक्खन भारतमें कैसे २ अत्याचार किये। भारत का धन वे अपने देशमें कैसे लेगये। भारतीय ललनाओं की कैसी बेइज्जती की। अन्तमें भगवान भारतवासियों पर दयालु॰

हुए। उन्होंने शान्तिप्रिय, प्रजावत्सला, न्यायशीला ब्रिटिश जाति को भारतवासियों के कष्ट निवारणार्थ भारत में भेजा। अँगरेज़ों ने सब भारतवर्ष अपने हाथ में लिया। मुसल्मान और पोर्चूगीज़ों को भगा कर भारत में शान्ति स्थापन की। आज अँगरेज़ महाराज के छत्रतले हम भारतवासी सुख चैन की बंशी बजाते हैं। देशमें लूट मार काटफाट बन्द है। शेर बकरी एक घाट पानी पीते हैं। एक महा बूढ़ी डोकरी भी सोना उछालती फिरती है पर कोई यह कहनेवाला नहीं है कि तेरे मुँह में के दाँत हैं।

यह सब हालात इस पुस्तक के पढ़ने से मालुम होंगे। कौन भारतबासी इन गुप्त और पुराने विषयों को न जानना चाहेगा? प्रत्येक भारतवासी को अपनी जन्मभूमिका पुराना हाल जानना चाहिये और अँगरेज़ों की भलाई के लिये उन का कृतज्ञता-भाजन होना चाहिये। दाम ॥) डाकखर्च ≠)

बाल गल्पमाला

यह पुस्तक हिन्दी जगत् में बिलकुल नयी और मनुष्य मात्र के देखने योग्य है। मनुष्य मात्र को चाहिये कि इसे पढ़े और अपनी सन्तान को पढ़ावे। अगर लोग इसे अपने बालकों को पढ़ावें तो यह अधोगति पर पहुँचा हुआ भारत फिर उन्नतिके उच्चतम शिखर पर चढ़ जाय। घर

घरमें सुख चैन की बाँसुरी बजने लगी। लड़के मा बाप की आज्ञा पालन करें और सभी स्त्रियाँ पतिव्रता हो जायँ।

इसमें रामचन्द्र की पितृ-भक्ति; भीष्म पितामह का कठिन प्रतिज्ञा पालन; लक्ष्मण और भरतका भ्रातृ-प्रेम; श्रीकृष्ण की विनय; युधिष्ठिर और महात्मा वशिष्ठ की क्षमाशीलता; हरिश्चन्द्र का सत्यपालन; मुद्गलका आतिथ्य-सत्कार; आरुणिक की गुरुभक्ति; महाराणा प्रतापसिंह के प्रोहित की राजभक्ति; चण्डका कर्त्तव्य पालन और कुन्तीका प्रत्युपकार खूब ही सरल और सरस भाषामें दिखाया है। अधिक क्या कहें पुस्तक घर घरमें विराजने और पूजी जाने योग्य है। दाम ।/) डाकखर्च /)

अलिफ़ लैला

पहला भाग।

यह ऐसी उत्तम किताब है कि जिस का तरजुमा फ्रेंच, जरमन, अँगरेजी, रूसी, जापानी आदि भाषाओंमें तीन तीन और चार चार प्रकार का हो चुका है। हमने भी इसका तर-जुमा एक निहायत बढ़िया अङ्गरेजी पुस्तकसे किया है। तरजुमे में कोई विषय छोड़ा नहीं है। भाषा इसकी निहा-यत सीधी साधी और ऐसी सरल रक्खी है कि थोड़े पढ़े बच्चे से लेकर बहुत पढ़े हुए विद्वान तक इससे आनन्द लाभ कर

सकेंगे। उपन्यासोंका स्वाद चखे हुए पाठकोंको यह पुस्तक बहुत ही प्यारी लगेगी। एकबार पढ़ना शुरू करके पढ़नेवाले खाना पीना भूल जायँगे और इसे समाप्त किये बिन न रहेंगे। पढ़नेवाले औरतों की चालाकियाँ, उनकी बेवफाई, आदि पढ़ कर हैरत में आजायँगे और कहने लगेंगे कि हे भगवन्! क्या औरतें इतनी मक्कारा होती हैं! देव राक्षस सन्दूकोंमें बन्द रख कर भी अपनी औरतोंकी चालाकी न पकड़ सके! औरतों ने जब देव जिन्नों के ही चूना लगा दिया तब मनुष्य विचारा क्या चीज़ है? २११ सफोंकी बड़ी पुस्तक का दाम केवल ॥/) और डाकखर्च /) लगेगा।

बीरबल की हाजिर जवाबी और चतुराई

अँगरेज़ी में एक कहावत है कि 'खुश रहो तो सदा तन्दरुस्त रहोगे"। मतलब यह है कि सदा निरोग और बलवान रहने के लिये मनुष्य को खुश रहने की ज़रूरत है। काम धन्धे से छुट्टी पाकर, चित्त प्रसन्न करनेवाली पुस्तकें देख कर दिल बहलाना, बहुत ही अच्छा है। इस पुस्तक में ऐसे ऐसे चुटकुले और बढ़िया २ किस्से छाँट छाँट कर लिखे गये हैं कि, पढ़नेवालोंकों को कोरा आनन्द आनेके सिवाय लाख लाख रुपये की नसीहतें भी मिलती हैं; मित्र-मण्डली हँसी के मारे लोटपोट होने लगती है; उद्विग्न चित्त लोगोंके दिलकी कली कली खिल उठती है। इस भागमें ८४ सफे

हैं। अक्षर साफ बम्बई के समान मोटे मोटे हैं। कागज़ बढ़िया है। तिस पर भी दाम केवल ।) मात्र है। डाक खर्च ≈)

कालज्ञान ।

यह पुस्तक वैद्यों या वैद्यक विद्या से प्रेम रखनेवालों या उसका अभ्यास करनेवालों के बड़े ही काम की है। ऐसी ही पुस्तकों के सहारे वैद्य लोग पहिले नाम और धन कमाते थे। वैद्योंको यह अपूर्व्व पुस्तक अवश्य गलेका हार बना कर रखने योग्य है। चिकने काग़ज़ पर मनमोहिनी छपाई सहित ७६ सफे की पुस्तकका दाम ।) डाकखर्च ≈)

संगीत बहार ।

यह गानेके शौक़ीनों लिये बहुत ही अच्छी पुस्तिका है। इसमें दादरा, ठुमरी, कवित्त, दोहे और थियेटरों के अच्छे अच्छे गाने चुन चुन कर दिये गये हैं। थोड़े दामों में ऐसी सुन्दर पुस्तक और जगह नहीं मिलती। दाम ।) डाकखर्च ≈)

प्रेम

इसमें एक सती स्त्रीके सच्चे प्रेम और सतीत्व का खाका खूब ही अच्छी तरह खींचकर दिखाया गया है। पुस्तक देखने ही योग्य है। दाम ≈) डाकखर्च ≈)

ख़ूनी मामला।

इसमें जासूसी लटके खूब ही दिखाये हैं। कदम कदम पर खूनी अपनी चालें खेलता है और जासूस कैसी चतुराई से उसका पीछा करता है। इसको भी ज़रूर देखिये। दाम ।) डाकखर्च ॥)

राग-रतनाकर

यह भी गाने की पुस्तक है। इसमें भी बहुत ही अच्छे अच्छे गाने संग्रह किये गये हैं। बाबू तारा चरण बरियार पुर निवासी की बनाई हुई गजलें देखने ही योग्य हैं। दाम ॥) डाकखर्च ॥)

सँगीत प्रवीणा

इसमें उर्दू की पुस्तकों से ऐसी अच्छी २ गजलोंका संग्रह किया गया है कि लिख नहीं सकते। अनेक थियेटरों के गाने ; लखनौ, बनारस, दिल्ली और आगरेकी मशहूर मशहूर रण्डियों की बनाई हुई जगत् प्रसिद्ध गज़लों का खूब ही समावेश हुआ है। कलकत्ते की जगत् प्रसिद्ध गौहरजान के गानोंकी यदि बहार देखनी हो, कलकत्ते बम्बई के थिये- टरों के बढ़िया बढ़िया गाने देखने हों, तो इसको अवश्य मँगाइये। एक खूबी और है कि इस में गाने बजाने के थोड़े

नियम भी समझाये हैं। जो गाने बजाने के शौकीन हैं उन्हें तो यह पुस्तक देखनी ही चाहिये; किन्तु जो गाने बजाने से प्रेम नहीं रखते उन्हें भी अवश्य देखनी चाहिये। दाम ।≠) डाकमहसूल ≠)

रामायण-रहस्य

प्रथम भाग

हिन्दी जगत् में यह भी एक नयी चीज़ है। रामायण का परिचय देना अनन्त सागर सलिलमें दो चार विन्दु जल डालना है। ऐसा भावमय, ऐसा सुमधुर, ऐसा शिक्षाप्रद, ऐसा भक्तिमय, ऐसा रसीला और दूसरा ग्रन्थ संसार में नहीं है।

इस जगत् में कितने ही ग्रंथ बने और बन रहे हैं परन्तु रामायण के समान किसी का आदर न हुआ। आदर कहाँ से हो, इसके समान और ग्रन्थ है ही नहीं। मातृ-भक्ति, पितृ-भक्ति, स्त्री-धर्म, मित्र-धर्म, राज-नीति, प्रजा-धर्म, प्रजा-पालन, युद्ध-शिक्षा, युद्ध-नीतिका जैसा सुन्दर चित्र रामायण में है वैसा और किसी ग्रन्थमें नहीं है। रामचन्द्रकी पितृ-भक्ति, लक्ष्मण और भरत की भ्रातृ-भक्ति, सीताका पति-प्रेम, दशरथका पुत्र-प्रेम, हनूमान की स्वामिभक्ति का नमूना जैसा इस ग्रन्थमें है और ग्रन्थोंमें नहीं है।

महात्मा तुलसीदासजी रामायण लिखकर अमर हो गये हैं किन्तु अनेक लोग ऐसे है जो तुलसीदासजी की गूढ़ भावमयी कविता को समझने में असमर्थ होते हैं। इसीसे हमने वाल्मीकि, अध्यात्म, मयङ्क और तुलसीकृत रामायणों के आधारपर इसे अत्यन्त सरल हिन्दीमें एक विद्वान् लेखक से लिखवाकर प्रकाशित किया है। जिन्हें वाल्मीकी आदि सारी रामायणों का सरल भाषामें स्वाद लेना हो वे इसे अवश्य देखें। बहुत क्या लिखें चीज़ देखने ही योग्य है। पढ़ते पढ़ते बिना खतम किये छोड़ने को जी नहीं चाहता। भाषा उपन्यासों की सी है; इससे चौगुना आनन्द आता है। घटनाएँ पानीकी घूँटकी तरह दिमाग़ में घुसती चली जाती हैं। छपाई भी इतनी सुन्दर हुई है कि देखते ही पुस्तक को छाती से लगाने को जी चाहता है। यह प्रथम भाग है। इसमें बालकाण्ड और अयोध्याकाण्ड पूरे हुए हैं। बड़े आकारके १६० सफोंकी पुस्तकका दाम ॥) डाक खर्च ≈)

हिन्दी भगवद्गीता ।

गीताकी एक एक शिक्षा, एक एक बात, मनुष्यको संसार के दुःख क्लेशोंसे छुड़ाकर तत्वज्ञान सिखाती है और संसारी मनुष्योंके अशान्त मनको शान्ति देती है। आत्मज्ञान जितनी

अच्छी तरह इसमें कहा गया है और पुस्तकों में नहीं कहा गया है। इसके पढ़ने समझने और इस पर विचार करनेसे मनुष्य संसार के बन्धनोंसे, जन्म मरणके कष्टसे, छुटकारा पाकर मोक्ष लाभ करता है। महाराज कृष्णचन्द्रका एक एक उपदेश पृथ्वी भरके राज्य से भी बढ़कर मूल्यवान है। मनुष्य मात्रको यह भगवद्वाक्य देखना, पढ़ना और समझना चाहिये और अपना भविष्य सुधारना चाहिये। आज तक गीताके कितने ही अनुवाद हो चुके हैं; मगर कुछ तो अधूरे हैं और कुछ ऐसी पुराने ढाँचेकी ऊटपटाँग हिन्दीमें अनुवाद हुए हैं, कि उनका समझना ही महा कठिन है; इसलिये गीता प्रेमियोंका मतलब नहीं निकलता।

यह अनुवाद एकदम सरल हिन्दीमें हुआ है और इतनी अच्छी तरह हरेक विषय समझाया है, कि मूर्खसे मूर्ख बालक भी गीताके गहन विषयोंको बड़ी आसानीसे समझ कर हृदयङ्गम कर सकेगा। ख़ाली गीता-पाठ करनेसे कुछ लाभ नहीं हो सकता; किन्तु गीताको पढ़कर समझने और विचार करनेसे जो लाभ मनुष्यको हो सकता है वह त्रिलोकीके राज्यसे भी बढ़कर है। अधिक क्या कहें इस पुस्तकमें ग्रन्थकर्त्ताने जैसी हरेक विषयको समझानेकी कोशिश की है वैसी किसीने भी नहीं की है। जिनके पास गीताके और और अनुवाद हों, उन्हें भी यह अनुवाद अवश्य देखना चाहिये।

देखिये ! देखिये ! ! देखिये ! ! !

किफ़ायत की तरकीब ।

१	स्वास्थ्यरक्षा	१॥)	१३	राजसिंह	॥=)
२	अंगरेजी शिक्षा १ ला भा०	॥)	१४	प्रेम	=)
३	अँगरेजीशिक्षा २ रा भा०	१)	१५	रामायण-रहस्य	॥)
४	अँगरेजीशिक्षा ३ रा भा०	१)	१६	संगीत बहार	।)
५	अँगरेजीशिक्षा ४ था भा०	१)	१७	रागरतनाकर	=)
६	अक्लमन्दीका खज़ाना	१)	१८	सँगीत प्रवीणा	।=)
७	हिन्दी बंगला शिक्षा	॥)	१९	बादशाह लियर	≡)
८	गुलिस्ताँ (हिन्दी)	१)	२०	भारतमें पोर्च्युगीज	॥)
९	गल्पमाला	।=)	२१	खूनी मामला	।)
१०	बालगल्पमाला	।=)	२२	बीरबल	।)
११	राधाकान्त	॥)	२३	अलिफलैला	॥=)
१२	मानसिंह	॥=)	२४	कालज्ञान	।)

उपरोक्त चौबीस किताबोंका दाम चौदह रुपया है। लेकिन जो साहब ये चौबीसों पुस्तक एक साथ मँगायेंगे और तीन रुपये पहले मनीआर्डरसे भेज देंगे उन्हें १४) का माल १२) में मिलेगा। लेकिन डाकखर्च ग्राहकोंको देना होगा। जो साहब इनमें से एक भी किताब एक साथ न मँगायेंगे या ३) रुपये पहले न भेजेंगे उन्हें २) रुपये कमीशनके न मिलेंगे। पत्र में अपना पता ठिकाना और समाचार साफ लिखना चाहिये।

हरिदास एण्ड कम्पनी

२०१ हरीसनरोड, बड़ा बाज़ार, कलकत्ता।

हिन्दी बँगला शिक्षा

द्वितीय भाग

হিন্দী বাঙ্গালা শিক্ষা

দ্বিতীয় ভাগ

लेखक

हरिदास वैद्य

प्रकाशक

हरिदास एण्ड कम्पनी

कलकत्ता

२०१ हरीसन रोड, बड़ाबाजार के "नरसिंह प्रेस" में

बाबू रामप्रताप भार्गव द्वारा मुद्रित।

RAM-BHAVAN,
SHAHZADPUR.

HINDI BENGALI SHIKSHA.

(Second Part)

By

PANDIT HARIDASS,

AN EXPERIENCED TEACHER,
Formerly Head Master T. A. V. School, Pokaran [JODHPUR]-
AND AUTHOR OF
Swasthya Raksha, Angrezi Shiksha Series, Aqlamandi-ka-
Khazana, Kalgyan & Translator of Gulistan,
Bhagavada Gita, Rajsingh or
Chanchal Kumari etc.

FIRST EDITION,

1912.

CALCUTTA,
Printed by RAMPRATAP BHARGAVA,
at the "Narsingh Press"
201, Harrison Road,
CALCUTTA.

lcutta.

प्रथम बार १०००]   [मूल्य ॥)

NOTICE,

Registered under Section XVIII of act

XXV of 1867.

All rights reserved.

आवश्यक सूचना ।

इस किताबकी रजिष्ट्री सन् १८६६ के ऐक्ट २५ सैक्शन १८ के मुताबिक़ सरकारमें हो गई है। कोई शख्स इसके फिरसे छापने, छपवाने या इसको उलट पुलटकर काम निकालनेका अधिकारी नहीं है। यदि कोई शख्स लोभ के वशीभूत होकर, ऐसा काम करेगा तो राज-दण्डसे दण्डित होगा।

हमारा वक्तव्य ।

जिस जगदाधारकी असीम कृपासे संसारके सम्पूर्ण कार्य सुचारु रूपसे सम्पन्न होते हैं ; उसी जगन्नायककी विशेष अनुकम्पा तथा साहित्यसेवी, उदारहृदय और विद्या-व्यसनी ग्राहकोंकी अशेष कृपाका यह फल है कि आज हम "हिन्दी-बँगला शिक्षा"का यह दूसरा भाग लेकर सर्वसाधारणके सम्मुख उपस्थित हो सके हैं । इसके प्रथम भागकी हिन्दी-सेवियोंने जैसी क़दर की, उसीसे मालूम होता है कि हमारी थोड़ी सी तुच्छ सेवाने कुछ विशेष फल दिखाया है और यही एक प्रधान कारण है कि हमारे हृदयमें वसन्तागमनके समान यह दूसरा भाग भी लिखकर ग्राहकोंकी सेवामें अर्पण करनेका विशेष उत्साह और अवसर प्राप्त हुआ ।

यद्यपि हमारी "बँगला-शिक्षा"के प्रथम भागने बँगला सीखनेमें बहुत कुछ सहायता प्रदान की है ; यद्यपि अधिकांश शब्द, नाम, वाक्य और मुहावरोंका उसीसे पता मिल जाता है ; यद्यपि बँगला सरीखे अथाह रत्नभाण्डारका आनन्द उपभोग करनेकी शक्ति उसी प्रथम भागसे ही आ जाती है ; तथापि व्याकरणसे अमूल्य विषयका, जो भाषाको शुद्ध करनेका एक मात्रही अस्त्र है, भीषण अभाव रह जाता है । बिना व्याकरण जाने किसी भाषाको पढ़ लेनेकी शक्ति आ जाने पर भी उसी भाषाको शुद्ध बोलने,